ज्योतिष ,स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक 45215/86

जीवन वैभव

स्थापना वर्ष : 37 | वर्ष अंक : 2 | अप्रैल से जून 2023

हिन्दू नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

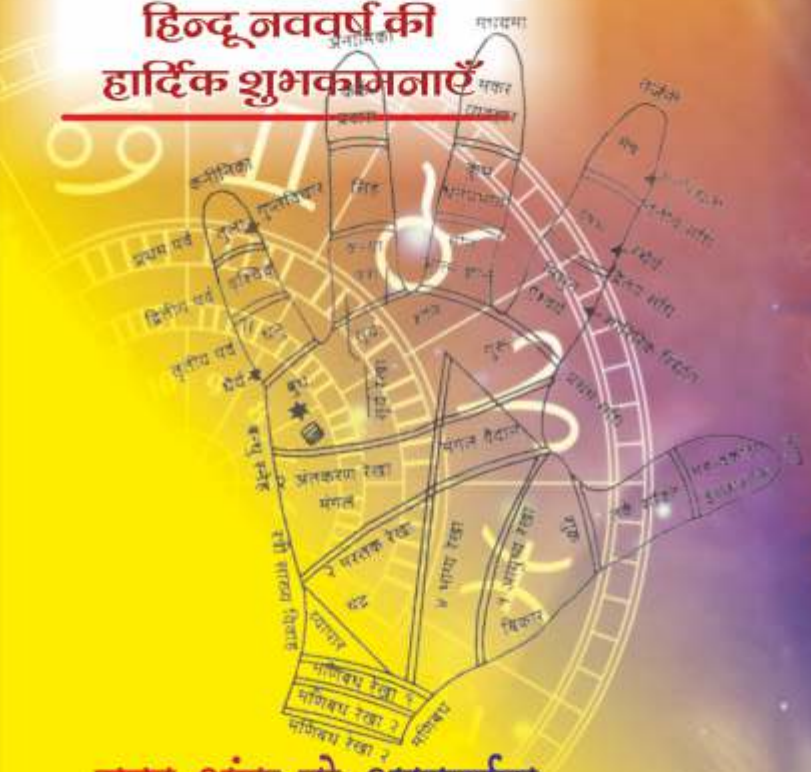

इस अंक के आकर्षण

- मधुमेह का रोग और ज्योतिष विवेचन
- वास्तुदोष के सुगम उपाय
- ज्योतिष एवं आजीविका योग
- नौकरी मिलने पदोन्नित और स्थानान्तरण योग
- ज्योतिष शास्त्र में अजीविका योग
- क्या दैवीय शक्तियां हमारी मदद करती हैं
- जन्म कुण्डली में चुनिंदा धन योग
- जीरा का घरेलू उपचार में महत्व
- त्रैमासिक भविष्यफल, व्रत पर्व एवं अन्य स्थायी स्तम्भ

मूल्य : 50 रू.

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

फलित ज्योतिष शिक्षा के लिए

पाराशरी ज्योतिष फलित कोर्स

बेसिक कक्षा हेतु सम्पर्क करें

व्यवस्थापक जीवन वैभव

15 ए, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी.नगर भोपाल, म.प्र.

मोबाईल– 9425008662

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक डाक/ कोरियर से जीवन वैभव कार्यालय से प्राप्त करें।

ज्योतिष मित्र

ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान के लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है। एक प्रति 150 रुपये + वी. पी. डाक/ कोरियर 50 रुपये इस प्रकार 200 रुपये भेजकर अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें।

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

जीवन मूल्य और नैतिक शिक्षा

लेखक – डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

मूल्य 150 रूपये

व्यवस्थापक

जीवन वैभव

15 ए, जोन–1, प्रेस कॉम्पलेक्स

संपर्क : 9425008662 ईमेल : hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार
की शिक्षाप्रद पत्रिका

स्थापना वर्ष : 37, अंक-2, अप्रैल से जून 2023

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

कानूनी सलाहकार
श्री अजय दुबे, श्री बी.एस. शुक्ला

सलाहकार मण्डल
श्रीमती पुष्पा चौहान, श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)

सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति - 50 रूपये
वार्षिक - 200 रूपये
त्रैवार्षिक - 500 रूपये
आजीवन - 5000 रूपये

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पृष्ठ क्रं.
1.	वंदना	2
2.	सम्पादक की कलम से	3
3.	वैभव दर्शन	5
4	मधुमेह का रोग और ज्योतिष विवेचन	6
5	वास्तुदोष के सुगम उपाय	7
6	ज्योतिष एवं आजीविका योग	9
7	नौकरी मिलने, पदोन्नति और स्थानान्तरण योग	11
8	केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर भोपाल में दो दिवसीय ज्योतिष सम्मेलन संपन्न	12
9	कन्या के विवाह, पति ससुराल पक्ष की जानकारी के ज्योतिषीय सूत्र	15
10	ज्योतिष शास्त्र में आजीविका योग	17
11	क्या दैवीय शक्तियां हमारी मदद करती हैं?	22
12	जन्म कुंडली में कुछ चुनिन्दा धन योग	23
13	जीवन की दौड़ में एक घटना की झलक	25
14	कोर्ट कचहरी विवाद में विजय के कुछ विशेष उपाय	27
15	अष्टमभाव पूर्वजन्मों के संचित कर्मों का रहस्य	29
16	फलित ज्ञान में अश्विनी नक्षत्र	31
17	जीरा का घरेलू उपचार में महत्व	33
18	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
19	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
20	आपके पत्र	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011 (म.प्र.) से मुद्रित, संपादकः डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादकः स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं,
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥१॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं,
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं,
गुणागार संसारपारं नतोऽहं॥२॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं,
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा,
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा॥३॥

हे ईशान! मैं मुक्तिस्वरूप, समर्थ, सर्वव्यापक, ब्रह्म, वेदस्वरूप, निजस्वरूप में स्थित, निर्गुण, निर्विकल्प, निरीह, अनन्त ज्ञानमय और आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त प्रभु को प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥ जो निराकार हैं, ओङ्काररूप आदिकारण हैं, तुरीय हैं, वाणी, बुद्धि और इन्द्रियों के पथसे परे हैं, कैलासनाथ हैं, विकराल, और महाकालके भी काल, कृपाल, गुणोंके आगार और संसार से तारनेवाले हैं, उन भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥ जो हिमालय के समान श्वेतवर्ण, गम्भीर और करोड़ो कामदेव के समान कान्तिमान् शरीरवाले हैं, जिनके मस्तकपर मनोहर गङ्गाजी लहरा रही हैं, भालदेश में बालचन्द्रमा सुशोभित होते हैं और गले में सर्पो की माला शोभा देती है ॥ ३॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं,
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं,
प्रिय शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ ४॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं,
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥ ५ ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥

जिनके कानों में कुण्डल हिल रहे हैं, जिनके नेत्र एवं भृकुटी सुन्दर और विशाल हैं, जिनका मुख प्रसन्न और कण्ठ नील है, जो बड़े ही दयालु हैं, जो बाघ की खाल का वस्त्र और मुण्डों की माला पहनते हैं, उन सर्वाधीश्वर प्रियतम शिव का मैं भजन करता हूँ ॥ 4 ॥ जो प्रचण्ड, सर्वश्रेष्ठ, प्रगल्भ, परमेश्वर, पूर्ण, अजन्मा, कोटि सूर्यके समान प्रकाशमान, त्रिभुवनके शूलनाशक और हाथमें त्रिशूल धारण करनेवाले हैं, उन भावगम्य भवानीपतिका में भजन करता हूं॥ 5 ॥ हे प्रभो! आप कलारहित, कल्याणकारी और कल्पका अन्त करनेवाले हैं। आप सर्वदा सत्पुरुषोंको आनन्द देते हैं, आपने त्रिपुरासुरका नाश किया था, आप मोहनाशक और ज्ञानानन्दघन परमेश्वर हैं, कामदेवके आप शत्रु हैं, आप मुझपर प्रसन्न हों, प्रसन्न हों ॥ 6 ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं,
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शांति सन्ताप नाशं,
प्रसीद प्रभो सर्वं भूताधिवासं ॥७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
न तोऽहं सदा सर्वदा शम्भू तुभ्यं ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं,
प्रभोपाहि आपन्नामामीश शम्भो ॥८॥
रुद्राष्टकं इदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये
ये पठन्ति नरा भक्तयां तेषां शम्भुः प्रसीदति॥९॥

मनुष्य जब तक उमाकांत महादेव जी के चरणारविन्दो का भजन नहीं करते , उन्हें इहलोक या परलोक में कभी सुख और शान्ति की प्राप्ति नहीं होती और न उनका सन्ताप ही दूर होता है। हे समस्त भूतों के निवासस्थान भगवान् शिव ! आप मुझ पर प्रसन्न हों ॥ 7 ॥ हे प्रभो । हे शम्भो । हे ईश ! मैं योग, जप और पूजा कुछ भी नहीं जानता, हे शम्भो। मैं सदा-सर्वदा आपको नमस्कार करता हूँ। जरा, जन्म और दुःख समूह से सन्तप्त होते हुए मुझ दुःखी को दुःख से आप रक्षा कीजिये ॥ 8 ॥ जो मनुष्य भगवान् शङ्कर की तुष्टि के लिये ब्राह्मण द्वारा कहे हुए इस रुद्राष्टकका भक्तिपूर्वक पाठ करते हैं, उनपर शङ्करजी प्रसन्न होते हैं ॥ 9 ॥

सम्पादक की कलम से...

सम्माननीय पाठकबन्धु

सहृदय हरिस्मरण

भारतीय वर्तमान परम्परानुसार विक्रम संवत 2080 की आप सभी को बधाई

जीवन वैभव पत्रिका का अप्रैल से जून 2023 का अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है जिसमें पहले के अंको से अधिक बेहतर अध्यात्मिक एवं फलित ज्योतिष के सिद्धान्तों के साथ उत्तम आलेख प्रस्तुत किए गए हैं। जीवन में शिक्षा और आजीविका का सबसे अधिक महत्व है जिससे कि आरंभिक जीवन की शुरुआत होती है उसके पश्चात धन तथा समृद्धि से ऐश्वर्य की वृद्धि के अनुसार भौतिक जीवन व्यक्ति जीता है। भौतिक जीवन के साथ-साथ मन की शांति और मानसिक सुख की आवश्यकता प्रतीत होती है उसके लिए भी पठनीय आलेख इस अंक में सम्मिलित किए गए हैं निश्चित रूप से ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ जीवन के सुख का अनुभव भी कर सकेंगे।

आर्थिक दृष्टि से प्रकाशन के लिए प्रिंटिंग आदि के कार्यों में व्यय/वृद्धि के फलस्वरूप आप सबकी सहमति से ही पत्रिका की मूल्य वृद्धि की है पाठकों से अपेक्षा है कि सदस्यता में कमी ना हो और जो सदस्य नियमित बन चुके हैं उनको निरंतरता रखने का अनुरोध सम्पादक मण्डल करता है। यह आश्वस्त करते हैं कि मूल्य वृद्धि के अनुरूप ही ज्ञान वृद्धि के आलेख इसमें सम्मिलित किए जाते रहेंगे।

इसी शुभकामना के साथ

आपका सदैव शुभेच्छु
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक

अमृत घट

1. जीवन की सफलता संचित धनराशि से न आंकी जाकर उन कार्यों से आंकी जायेगी जो समाज के कल्याण के विचार से किए गए हो। **- विनोबा भावे**

2. जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह किसी अच्छे कार्य में लगाया जाये।
- रविन्द्रनाथ ठाकुर

3. प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्यत्व का दूसरा नाम है, समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है। **- भगवान बुद्ध**

4. सच बोलने वाला कम बोलता है और अधिक बोलने वाला झूठ पर जो तोलकर बात नहीं करता उसे कठोर बातें सुननी पड़ती है। **- स्वेट मार्डन**

5. ज्यादा बोलने की आदत अच्छी नहीं होती, इससे आदमी हल्का समझा जाता है। इसलिए बहुत बोलने की बजाय बहुत सुनना कहीं अच्छा है। **- संत तुलसीदास**

6. अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे तो वह कंगाल हो जाता है।
- चाणक्य

7. शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान कोई दूसरा पाप नहीं।
- लोकमान्य तिलक

8. निश्चय ही आरोग्य शरीर से ही धर्म और कर्तव्य का पालन हो सकता है। रोगी शरीर से नहीं।
- दयानन्द

9. धन के मद में मतवाला मनुष्य गिरे बिना होश में नहीं आता।
- भृर्तृहरि

10. ज्ञान तीन प्रकार से मिल सकता है मनन से, जो सबसे श्रेष्ठ होता है, अनुसरण से, जो सबसे सरल होता है, और अनुभव से जो सबसे कड़वा होता है। **- संत ज्ञानेश्वर**

वैभव दर्शन

समय की कीमत समझे उसे सदा महत्व दें

स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

"समय को महत्व देना बहुत आवश्यक है क्योंकि अवसर सदैव समय की कद्र करने पर ही मिलते हैं। यह बात पूर्व संस्थापक सम्पादक देवलोकवासी स्व. रामचन्द्र जी पाण्डेय ने कही थी- सम्पादक"

जीवन में हमेशा समय की कद्र करना चाहिए यदि समय पर आपने अपने आप को स्वस्थ्य नहीं रखा शिक्षा प्राप्त करके योग्यता हासिल नहीं की तो एक उम्र निकलने के बाद केवल पछतावा ही शेष रह जाता है कहा गया है कि

समय बीति फिर का पछताना

समय निकलने के पश्चात सिर्फ पछताने से कुछ भी नहीं हो सकता। समय की हमेशा कीमत करना चाहिए क्योंकि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। विद्यार्थी काल में यदि अध्ययन नहीं किया तो रोजी रोजगार में भी योग्यता के नहीं होने से पिछड़ना पड़ सकता है अपने स्वयं के कार्य में भी ज्ञान की जरूरत तो होती ही है। प्रत्येक कार्य में समय को मुख्यता नहीं दी आलस्य मय जीवन बनाया तो निष्क्रियता का बोल बाला होकर उम्र बीतने के साथ साथ समय चूकने के पश्चात फिर कुछ नहीं हो सकता।

कई लोग असाधारण अवसरों की बाट देखा करते हैं किंतु वास्तव में कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता छोटे से छोटे अवसर का समय पर उपयोग करने से अपनी बुद्धि को उसमें लगा देने से वह छोटा अवसर भी बड़ा हो जाता है अतः समय पर अवसर को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन का प्रत्येक पल उपयोगी है उसका आकलन करना सीखना चाहिए। जीवन के जो क्षण व्यतीत हो गए उन्हें हम न तो सोने चांदी जवाहरात से खरीद सकते हैं एवं नहीं किसी प्रकार से वे लौट सकते हैं।

हमारे जीवन के समय में से यदि हम आराम करने का समय, शारीरिक अस्वस्थता का समय, पारिवारिक अथवा सामाजिक दायित्व निर्वहन का समय आदि की गणना करते हुए कम करें तो हम पाएंगे कि हमारे पास समय कितना शेष बचता है? वह समय बहुत कम बचता है, जिसे हम कुछ रचनात्मक कार्य करने में लगा सकें। इसलिए आवश्यक है कि हमें अपने जीवन में आवश्यक कार्य के अतिरिक्त कुछ रचनात्मक कार्यों के लिए समय निकालना चाहिए। हम अपने जीवन में यदि कुछ बुराईयों में घिर गए हों तो उन्हें दूर करते हुए भले कार्यों में जीवन जीने के लिए प्रेरणा लेनी चाहिए। बुरे कार्य क्या हो सकते हैं। उन्हें हम अपने अन्तर्मन से स्वयं सोचें। उन्हें व्यक्त कर आपको बताने की जरूरत नहीं है, क्योंकि व्यक्ति अपने आपके लिए खुद पारखी है। वह अपने सही एवं गलत कार्यों को भी भलीभाँति जानता है। अतएव स्व-प्रेरणा लेकर अपने शुभ कार्यों की वृद्धि करें अपने द्वारा किए जा सकने वाले शुभ कार्यों से संतुष्ट होकर प्रतिदिन अपने व्यक्तित्व को ऊंचा उठाने वाला कार्य करने की आदत डालना चाहिए।

मधुमेह का रोग और ज्योतिष विवेचन

बीना देसाई
ज्योतिष शास्त्री, मुम्बई

आजकल के आधुनिक युग मे शारीरिक श्रम कम और मानसिक स्ट्रेस ज्यादा रहता है, ज्यादातर काम या तो मशीन से या बैठकर कंप्यूटर से करते है यही कारण है कि ये रोग की जड़मूल जिसके कारण ये राजरोग पनपता है।

ये रोग शरीर की पेन्क्रियास के कार्य का असंतुलन से होता है, पाचनतंत्र का प्रमुख अंग जो छोटी आंत का पहला भाग होता है, पेन्क्रियास शरीर मे खाने को पचाने में मदद करता है, जो इन्सुलिन नामक हार्मोन्स बनता है जो ग्लुकोज को नियंत्रित करता है, साथ शरीर की फैट और प्रोटीन को संतुलित करता है, जब भी ये हारमोंस मैं कोई दिक्कत बने तो मोटापा ,सूजन,और मधुमेह जैसे रोग से जातक पीड़ित होगा शरीर मे सही तरीके से ग्लुकोस की मात्रा नही होती है ब्लड में तो ऐसी स्थिति में थकान महसूस होती है।

शर्करा रोग कालक्षण

1. वजन घटना
2. भूख ज्यादा या कम लगना
3. थकान,डिप्रेशन होना
4. कोई भी घाव मिले तो जल्दी ठीक नहीं होता।
5. बार बार मूत्र के लिए जाना ।

डायबीटिज (शर्करा) रोग का सामान्य उपचार

1. नियमित पैदल चलना, और योग करना जरूरी है।
2. स्ट्रेसफुल लाइफ में बदलाव लाना जरूरी।
3. कोई उपवास (खालीपेट) या जंक फूड का निषेध रहना चाहिए
4. नियमित सात्विक आहार लेना जरूरी है ।
5. ये एक राजरोग बोलते है क्योंकि ये रोग अपने साथ कई प्रकार की दूसरी बीमारी लाता है, अतःनियमित चेक अप अनिवार्य है।

रोग विवेचन जन्मकुंडली से

पेन्क्रियास 5,6,7 से और 8 भाव लंबे समय साथशरीर का टोक्सिन बाहर जाने

का मार्ग है इस रोग मे मूत्र से ही शर्करा अति तेज बहाव से आती है ।

कारक - शुक,गुरु जो हार्मोनल के कारक केसाथ सप्तम भाव जो पेन्क्रियास स्थान है, जब भी सप्तम भाव साथ गुरु,शुक किसी तरह 6,8 भाव से जुड़े और पीड़ित बने तो यह रोग होने की संभवना बनती है, साथ वृश्चिक राशि भी राहु,केतु से प्रभावित होगी

वृष लग्न लग्नेश रोग स्थान में, अष्टम के नक्षत्र के, साथ अष्टम से दृष्ट, पंचमेश बुध अस्त होकर त्रिक स्थान यानी पाचन शक्ति में कमजोरी साथ केतु दृष्टि पंचम पर गुरु जो राहु नक्षत्र से वृश्चिक राशि पर राहु प्रभाव, साथ कभी कभी लग्नेश के साथ सूर्य,चँद्र भी पीड़ित बने तो लंबे समय तक ये रोग कंट्रोल नही हो पाता।

कुछ मधुमेह की कुंडली मे पाई गई निम्नानुसार स्थिति

धनु लग्न शुक रोगेश होकर सप्तमेश साथ पंचम पर द्रष्टि, अष्टम भाव और वृषिक राशि राहु से पीड़ित, सूर्य,चन्द्र दोनो पीड़ित इनको मानसिक तनाव (स्ट्रेस) से यह रोग संभव। शुक, गुरु दोनों नक्षत्र से पीड़ित

कर्क लग्न लग्नेश, शुक्र, गुरु त्रिक स्थान या राहु से पीड़ित होना।

कन्या लग्न 5 वांभाव राहु से पीड़ित गुरु,शुक दोनो शनि,केतु से पीड़ित होना।

मकर लग्न लग्नेश, शुक्र,गुरु तीनो राहु,केतु से पीड़ित।

तुला लग्न शुक,गुरु दोनो ही राहु से पीड़ित।

निष्कर्ष 1. सभी कुंडली मे वृश्चिक राशि राहु,या केतु से पीड़ित।

2. लग्न,या लग्नेश पाप ग्रह से प्रभावित होना।

3. शुक,गुरु वायुतत्व राशि से ; नक्षत्र राहु से या द्रष्टि से प्रभावित।

4. सभी में सूर्य,चंद्र पीड़ित त्रिक स्वामी से या पाप प्रभाव।

5. सूर्य इम्युनिटी कारक, और चँद्र फ्लूइड कारक भी कमजोर होते है।

वास्तुदोष के सुगम उपाय

जीवन वैभव ग्रुप तथा इंटेलेक्चुअल एस्ट्रोलॉजिकल ग्रुप के विद्वानो ने वास्तु दोष निवारण के विषय पर चर्चा द्वारा सुगम उपाय व्यक्त किए है विषय पर चर्चा डॉ हेमचंद्र पांडेय के द्वारा आरंभ की गई तथा कुछ सरल सूत्र बताए। क्रमबद्ध रूप से उपाय निम्नानुसार है - ***सहा सम्पादक***

डॉ हेमचन्द्र पाण्डेय

वास्तु अनुरुप मकान होने तथा सामान्य से कोई दोष होने पर अनावश्यक चिताएं तथा मन में भ्रांन्तियां उत्पन्न नही होने देकर हुए धनात्मक सोचना चाहिए ताकि भवन में अपनी प्रसन्नता तथा ईश्वर भक्ति से उत्पन्न धनात्मक तरंगे मकान में उत्साह और प्रगतिशील विचारधारा उत्पन्न करने वाली हो जाती है। और मानसिक रूप से संतुष्टि प्राप्त होती है नकारात्मक विचार ही भ्रांतियां उत्पन्न करते हैं और व्यक्ति में असंतोष की भावना जागृत करते हैं इसीलिए ईशान्य कोण को महत्व दिया है जोकि अधिकतम खुला रहना चाहिए जहां से पूरे भवन में धनात्मक ऊर्जा का प्रवेश हो सकता है ईश्वर/ अपने इष्ट देव की आराधना भी इस ईशान्य कोण में करना उत्तम माना गया है वास्तु का सम्बंध ग्रह की अधिपति दिशा निर्धारित होती है इनमे सुधार हेतू उन ग्रहों के आधार पर ही उपाय कारगर रह सकते है।

जेसे निर्मित भवन के ईशान्य कोण में टाइलेट और रसोई घर निषिद्ध है यह स्थान खुला होना चाहिए ताकि शुद्ध हवा का भवन मे प्रवेश हो सके और निर्मित भवन के ईशान्य में पूजागृह होना चाहिए। रसोई घर मकान के अग्निकोण में होना चाहिए यदि किसीकारण संभव नही हो सके तो उत्तर पश्चिम (वायव्य) दिशा की ओर होना चाहिए। घर के प्रवेश द्वार पर स्वस्तिक का चिन्ह धातु का, सिन्दुर या कुकुंम से बनाना भी वास्तु दोष निवारण का सरल उपाय है।

त्रुटी पूर्ण सीढ़ी होने पर क्रिस्टल या कान्च की कटोरी मे सेंधा नमक या फिटकरी भर कर रखना होता है जिसे हर माह सामग्री बदलने से दोष कम होता

है। प्लाट जमीन का चोकोर अथवा आयताकार होना आवश्यक।

भवन बनने से पहले भवन के लिए निर्धारित भूखण्ड की शुद्धता के लिए पूरे प्लाट की कमसेकम 3फीट मिट्टी की खुदाई होनी चाहिए।

अग्नी कोण में भोजन शाला हो मास्टर बैड रुम दक्षिण पश्चिम मे हो न्पूर्व मे स्टडी रूम हो। उत्तर मे तिजोरी हो तो आवास वास्तु दोष रहित होता है।

जन्म कुण्डली में यदि राहु जन्य दोष है तो हमें चाहिए कि अपने मकान के ईशान कोण में भगवान का मंदिर या अंडर ग्राउंड पानी का टैंक बना देना ही पर्याप्त होना चाहिए। नेऋत्य कोण जिसे यमकोण भी कहते हैंउसे थोड़ा ऊंचा और भारी सामान रखने से संतुलन बनाना चाहिए।

नेऋत्य कोण मे कोई द्वार नहीं होना चाहिए। मकान का नेऋत्य कोण बंद हो तो अधिक उपयुक्त होता है।

मुख्य द्वार पर प्रिज्म टांगे

डॉ श्रीलखन दहिया

यदि किसी भवन में थोड़ा वास्तुदोष रह गया है तो उस दोष निवारण के लिए जिसमें कही भी किसी भी वास्तु दोष (बॅधी भूमि का सीमित क्षेत्र) का एक अचूक निवारण- **प्रवेश मुख्य द्वार के ठीक ऊपर बीचो बीच एक प्रिज्म टॉग दें-**

वास्तुदोष खत्म हो जाएगा।

परन्तु यदि मकान के अंदर राहू जनित नकारात्मक प्रभाव बना होगा तो नैऋत्य व ईशान कोण का ट्रीटमेंट करना होगा।

संपूर्ण वास्तु सम्मत भवन बनना थोड़ा मुश्किल होता है

पं. श्री नरेश शर्मा

व्यक्ति अपने जीवन काल में अपनी गाड़ी कमाई से मकान बनाता है थोड़ी बहुत कमियां तो रही जाती है जिसमें प्लाट का दिशा शयन कक्ष अथवा पूर्वी पश्चिमी भाग में छोड़ी जाने वाली रिक्त भूमि आदि भवन का निर्माण के समय परिस्थिति जन्य कहीं ना कहीं कोई ना कोई वास्तु दोष भवन में रह ही जाता है।

जिओ पैथक स्ट्रेस यदि भवन की भूमि के अंदर है तो ऊपर के दिशाओं संबंधी वास्तु दोषों को दूर करने का कोई लाभ नहीं।।

ऐसे में वास्तु दोष दूर करने एक मुख्य उपाय है जिससे वास्तु दोष मुक्त भवन में हम निवास कर सकें?

वास्तु दोष निवारण के संदर्भ में हमारे महर्षिओं ने हम मानव जाति पर बड़ी महती कृपा की है।।

गृह प्रवेश के समय गणेश गौरी, नवग्रह मंडल षोडश मातृका पूजन, वास्तु मंडल का पूजन वैदिक और पौराणिक मंत्रों के द्वारा कर , क्षेत्रपाल बली, भवन में प्रथम गौ प्रवेश तत्पश्चात कलश युक्त कन्याओं का प्रवेश, करवा कर ब्रह्मांड पुराण के अंतर्गत ललितो पाख्यान के तहत मणिदीप वर्णन का पाठ कराने से संपूर्ण वास्तु दोष निष्प्रभावी हो जाते हैं।

प्रत्येक नवरात्रि में मणिद्वीप वर्णन के पाठ करने से भयंकर से भयंकर वास्तु दोष निष्प्रभावी हो जाते हैं।।

श्रीपं लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी

वास्तु हमारे निवास और कार्य स्थल पर पंचमहाभूत तत्वो, ग्रहो और दिशाओ के संयोजन से बनी ऊर्जा का दैनिक क्रियाकलापो का तालमेल बनाने का कार्य करता है।

वास्तु का भाग्य से बहुत गहरा संबंध है। यदि भाग्य मे कुछ कमी है तो वह वास्तु मे स्वमेव ही परिलक्षित होगी यह आशय है। वास्तु से संबंधित उपाय ग्रहो से संबंधित उपाय के समानांतर ही माने जा सकते है।

उदाहरण के रुप मे यदि किसी पुरुष का सप्तम भाव/ शुक्र खराब है तो उसके वास्तु मे दक्षिण पूर्व अर्थात आग्नेय कोण दूषित हो सकता है जिसका उपाय करने पर उसके शुक्र के फलो मे सुधार किया जा सकता है। दोष किस प्रकार का है निवारण भी उसी प्रकार का होगा। दक्षिण पूर्व अग्नि का स्थान है तो वहां नलकूप या जल का भूमिगत भंडार है तो उसे अग्निकोण से हटाना ही एक उपाय हो सकता है

इस तरह अलग अलग दोषो के अलग अलग उपाय होंगे

वास्तुशास्त्र मे सभी दिशाओ का पंच महाभूत तत्वो और ग्रहो से संयोजन प्रमुख बिंदु है। इसके अतिरिक्त वास्तु पुरुष के अनुसार सभी दिशाओ के अधिष्ठाता देवताओं के बारे मे जानकारी भी आवश्यक है जिसके उपरांत वास्तुशास्त्र मे सभी क्रियाकलाप के स्थान स्वतः निर्धारित किए जा सकते है। इस बारे मे संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है।

पंच महाभूत तत्वो का दिशा और ग्रहो से संबंध

अग्नि - दक्षिण-मंगल
पृथ्वी - उत्तर-बुध
वायु - पश्चिम-शनि
जल - पूर्व-सूर्य

इसके अतिरिक्त अन्य दिशाए जिसमे आकाश सहित पांच तत्वो का मिश्रित संयोजन होगा वे है।

उत्तर पूर्व - वृहस्पति
दक्षिण पूर्व - शुक्र
दक्षिण पश्चिम - राहु/केतु
उत्तर पश्चिम - चंद्र

वास्तुपुरुष के अनुसार दसो दिशाओ के अधिपति निम्न प्रकार है

उत्तर - कुबेर
उत्तर पूर्व - शिव
पूर्व - सूर्य
दक्षिण पूर्व - अग्निदेव
दक्षिण- यम
दक्षिण पूर्व - नैऋति
पश्चिम - वरुणदेव
उत्तर पश्चिम - वायुदेव
आकाश - ब्रह्म
पाताल - वासुकी

ये कुछ प्रमुख देवता है अन्यथा वास्तु पुरुष मे 81 पद मे 81 देवतागण का उल्लेख है।

इन सभी दिशाओ और दिशापालो का संयोजन वास्तुशास्त्र मे दिखता है जैसे उत्तर के दिक्पाल कुबेर है अतः खजाना उत्तर मे रखना श्रेष्ठ है परंतु यदि आपका खजाना दक्षिण पश्चिम मे है तो आपका धन अनावश्यक तथा बुरे कार्य मे व्यय होगा। इसी प्रकार सभी दिशाओ मे वास्तु अनुसार अपने भवन में स्थान /कार्य का संयोजन कर जीवन को सुगम बनाना ही वास्तुशास्त्र का उद्देश्य है ; जिस प्रकार पानी के बहाव के विपरीत तैरना नुकसान प्रद हो सकता है उसी प्रकार वास्तुशास्त्र के नियम विरुद्ध क्रियाकलाप करना कष्टदायक हो सकता है।

ज्योतिष एवं आजीविका योग

डॉ. श्रीमती पुष्पा चौहान
(अध्यक्ष, आय.ए.एस.आय)

आज के समय हमारे समाज में आजीविका चयन करना बड़ी समस्या है, पढ़ लिख कर युवा वर्ग बेरोजगारी से तनाव ग्रस्त है, जबकि शिक्षा लेने के साथ ही अपनी आजीविका के बारे में निर्णय लेकर समय का सदुपयोग करना चाहिए। इस समस्या को दृष्टिगत रखते हुए आजीविका निर्धारण के लिए कुछ विशिष्ट योग पाठकों तथा ज्योतिष प्रेमियों के लाभार्थ दिए जारहे है ताकि जातक को जन्मकुण्डली देखकर शिक्षा लेने के समय ही आजीविका निर्धारण के लिए निर्णय लिया जासके ताकि समय और धन का सदुपयोग हो सके।

जन्मपत्री में भाव 10 कर्म का है और नौकरी से संबंधित है तथा भाव 7 प्रक्रिया तथा साझेदारी व्यवसाय को व्यक्त करता है। वृष, कन्या तथा व्यापार की मुख्य राशियां है। चंद्र, बुध, बृहस्पति तथा राहु व्यापार करने के लिए महत्वपूर्ण ग्रह है। कुछ योग निम्न लिखित है-

1. जन्मकुंडली में लग्न, चन्द्रमा, द्वितीय, एकादश दशम, नवम तथा सप्तम भाव मजबूत होना।

2. लग्न स्वामी के साथ द्वितीय और एकादश के स्वामी का केंद्र, या त्रिकोण हो तथा शुभ ग्रह से दृष्ट होना अथवा मजबूत लग्न स्वामी के साथ द्वितीय, या एकादश के स्वामी का बृहस्पति के साथ दशम, या सप्तम में होना।

3. पंचम भाव, या भावेश का संबंध यदि दशम, दशमेश से है, तो जातक अपनी शिक्षा का उपयोग का व्यवसाय में अवश्य करता है। व्यवसाय के संदर्भ में राशियों और की प्रकृति और तत्व को भी ध्यान में रखना होगा। साथ में नक्षत्र भी इस संदर्भ में जानकारी देने में सहयोगी होते हैं।

व्यवसाय के लिए कुछ विशेष ग्रह योग

1. भाव 10 के स्वामी ग्रह के गुण, स्वभाव के अनुसार जातक का व्यवसाय होता है।

2. दशम भाव का स्वामी किस राशि एवं भाव में स्थित है। उस राशि के अनुसार जातक का व्यवसाय होता है।

3. लग्न भाव एवं लग्नेश का भी व्यवसाय पर प्रभाव पड़ता है।

4. जन्मकुण्डली में बलवान ग्रह आत्मकारक आदि का भी व्यवसाय चयन पर प्रभाव पड़ता है। ऐसी कम कुंडलियां होती है जिनमें ग्रह पर किसी अन्य ग्रह का प्रभाव नहीं पड़ता हो इसलिए ग्रह पर युति और दृष्टि का प्रभाव रहता है। अतः व्यवसाय फल कथन करने में इसका भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। कुछ योग व उनसे व्यवसाय जो संबंधित हैं वे निम्नानुसार हैं-

1. सूर्य + चन्द्र से सेनापति जैसा कार्य
2. सूर्य+मंगल- नशाखोरी, दंडाधिकारी
3.सूर्य + बुध-विज्ञान संबंधी ज्ञान ।
4. सूर्य + गुरु-सलाहकार या पुरोहित जैसे कार्य। 5. सूर्य + शुक्र वाहन सुख।
6. सूर्य + शनि- परदेश (दूर शहर) में नौकरी।
7 सूर्य+ राहु- अपराधियों से संबंधित।
8. सूर्य + केतु-धार्मिक, अध्यात्मिक, कृषि संबंधित आदि ज्ञान व रुचियां होती है। ये युति या दृष्टि में यह देखना जरूरी होगा कि दोनों ग्रहों में बल कितना है उसी अनुसार व्यवसाय की उन्नति व दृढता होगी।
9. चंद्र + मंगल-व्यापार से जीवन यापन
10. चंद्र + बुध-सलाहकार
11. चंद्र + गुरु- ज्योतिषी या धार्मिक कर्मकांडी
12. चंद्र + शुक्र-विलासिता की वस्तुएँ
13. चंद्र + शनि-पुस्तक व्यवसाय या दार्शनिक प्रकृति
14. मंगल + बुध वैज्ञानिक, इंजीनियर
15. मंगल + गुरु-मजदूरों का नेतृत्व
16. मंगल +शुक्र- हथियार व विदेश व्यापार
17. मंगल + शनि दुस्साहस के काम
18. बुध + गुरु-राजकीय अधिकारी कर्मचारी
19. बुध + शनि क्लर्क/लेखन कार्य
20. गुरु+ शुक्र राज्य सेवा का अधिकारी
21. गुरु + राहु- दुष्ट स्वाभाव के काम
22, गुरु + मंगल-शिक्षा संस्थाओं का

अधिकारी। ये सभी योग केवल व्यवसाय को इंगित करते हैं। गहराई से देखने के लिए कुंडली में इन ग्रहों को क्या क्या तत्कालीन अधिकार प्राप्त है उस पर भी फलित अधिक निर्भर करेगा।

स्वतंत्र व्यवसाय योग

1. यदि चंद्रमा से केंद्र में बुध वृहस्पति शुक्र यह सभी या इनमें से कोई हो।
2. यदि बुध, शुक्र, चंद्र एक दूसरे से द्वितीयस्थ या द्वादशस्थ हो।
3. यदि चंद्रमा से बुध और शुक्र तीसरे ग्यारहवें में हो तो स्वतंत्र व्यवसाय हो।

व्यवसाय में सफलता के योग

1. यदि लग्न, चंद्र, सूर्य तीनों में से जो बली हो में से दशम स्थान में यदि बुध हो तो व्यवसाय में सफल होता है।
2. भाव 10 पर कई शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो सफल होता है।
3. भाव 10 का स्वामी तथा लग्नेश एक साथ हो तो भी सफलता मिलती है।
4. यदि लग्नेश भाव 10 में हो तो भी सफलता मिलती है।
5. यदि दशमेश भाव 1,4,7, 10 या त्रिकोण 5,9 या भाव 11 में शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी सफल होता है।
6. दशम भाव में बैठा ग्रह यदि उच्च ग्रह हो तो अचानक और अधिक प्रगति होती है। और यदि नीच ग्रह हो तो कम उन्नति होती है और जब दौनों हों तो उतार चढ़ाव होता रहता है।
7. यदि चंद्रमा से केन्द्र 1,4,7,10 में बुध, गुरु, शुक्र में से कोई या तीनों ग्रह हों तो भी सफलता मिलती है।
8. यदि चंद्रमा से बुध, शुक्र एक दूसरे से द्वितीयस्थ या द्वादशस्थ हो तो भी सफलता मिलती है।
9. यदि चंद्रमा से गुरु, शुक्र तृतीयस्थ या एकादशमस्थ हो तो भी सफलता मिलती है।
10. यदि भाव 2 का स्वामी भाव 11 में हो तो तथा भाव 11 का स्वामी भाव 2 में हो तो जातक बहुत सफल व्यवसायी होता है।
12. यदि भाव 10 का ग्रह अशुभ हो तो आलस्य और विलंब युक्त व्यवसाय तथा शुभ ग्रह हो तो परिश्रमी और शीघ्र सफल व्यवसाय बनाता है।
13. यदि मंगल और भाव 4 का स्वामी किसी एक केंद्र में अथवा त्रिकोण में या भाव 11 में हो और भाव 10 का स्वामी चंद्र, शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो जातक कृषि एवं पशुपालन का व्यवसाय होता है।
14. यदि भाव 9 में शनि,बुध और शुक्र हो तो जातक कृषि द्वारा धनी होता है।

व्यवसाय में हानि योग

1. अगर सूर्य, शनि भाव 5 में हो तथा जातक सरसों तेल आदिका तो हानि होगी।
2. अगर शनि भाव 10 में हो और जातक डाक्टर बनता है तो उसे अपयश मिल सकता है।
3. यदि भाव 12 में राहु बुध हो तो राहु के कार्य बिजली ,जेल आदि कार्यों में हानि होगी ।
4. अगर सूर्य भाव 12 में हो तो शनि कि वस्तु चमड़ा, तेल, पत्थर, बिजली में हानि होगी।
5. भाव 4 में चंद्रमा हो दूध के कार्य में हानि होगी।
6. सूर्य यदि भाव 3 या 5 में और शनि भाव 9 में हो तो सोना चांदी से तो लाभ होगा लेकिन शनि के कार्यों में हानि होगी।

आजीविका विचार- व्यापार का कारक ग्रह बुध द्वितीय, तृतीय, सप्तम, या एकादश भाव में उच्च, या स्वगृही हो। क्रूर ग्रहों की निगाह नहीं हो, तो जातक सफल व्यापारी होता है। इस ग्रह की राशि मिथुन, या कन्या इन भावों में पड़ी हो, बुध किसी शुभ के साथ स्थित हो, या शुभ योग बना रहा हो, तो भी जातक कुशल व्यापारी होता है ।

लग्न, चन्द्रमा और सूर्य, इनमें जो सबसे बली हो, उससे दशम स्थान के नवांश पति के स्वरुप या गुण के अनुसार जीविका प्राप्त होती है। भाव 10 की कारक ग्रह ,सूर्य ,बुध, गुरु और शनि हैं इस भाव 10 में कोई ग्रह ना हो तो दशमेश अजीविका का चुनाव करना चाहिए। इसके बाद नवांश कुंडली में भाव 10 के ग्रह को देखना चाहिए। यदि भाव 10 में 2 या अधिक ग्रह हो तो जो बलवान ग्रह हो तो उसे ज्यादा महत्व देना होगा। यदि 2 ग्रह बराबर के बली हो तो दोनो को मिलेजुले रुप में लेना चाहिए। भाव 10 में पड़ने वाली राशियां, इन राशियों के तत्व के आधार पर भी बहुत कुछ बताया जा सकता है। यदि भाव 10 में अग्नि तत्व की राशियां मेष, सिंह, धनु हो तो जातक इंजीनियर, लोहे या धातु आदि के उद्योग या मोटर वाहन संबंधित काम करता है। यदि भाव 10 में वायु तत्व की राशियां मिथुन, तुला, कुंभ हों तो इलेक्ट्रानिक के कार्य, वैज्ञानिक, विचारक आदि होता है। यदि भाव 10 में पृथ्वी तत्व की राशियां वृष कन्या, मकर हो तो जातक प्रशासनिक कार्य, आर्थिक कार्य, सिविल कार्य, धातु संबंधी काम, खेती-बाडी या ऐजेंसी के कार्य करता है। यदि कर्क, वृश्चिक, मीन जैसी जल तत्व की राशियां भाव 10 में हों तो तरल पदार्थ, रसायन, डेरी व्यापार, शराब उद्योग, सामुद्रिक जहाजरानी या ठंडे पेय

नौकरी मिलने, पदोन्नति और स्थानान्तरण योग

श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस

आजकल अधिकतर लोग पढ़ाई के बाद नौकरी ढूंढ़ने के लिए प्रयास करते हैं तथा ज्योतिषियों से भी परामर्श के लिए जाते है, नौकरी के लिए ग्रहयोग, दशा अंर्तदशा के माध्यम से देखे जाने के लिए प्रख्यात विद्वान श्री एस.एस.लाल से सम्पर्क के बाद उनके द्वारा बताए गए सूत्रों को लिपीबद्ध किया गया है जो निम्नानुसार है **-सम्पादक**

पढे लिखे शिक्षित युवक का रुझान नौकरी करने के लिए वर्तमान में अधिक हो रहा है जब नौकरी के लिए निर्धारित आयुसीमा पूर्ण होने के बाद अपना स्वयं का रोजगार का प्रयास करते हैं। शिक्षित युवाओं का समय व्यर्थ बेरोजगार व्यतीत नहीं हो इस दृष्टि से जन्मपत्रिका के ग्रह योग देखकर योग के आधार पर नौकरी का निर्णय हेतु सूत्र प्रस्तुत है।

1. जब गोचर भ्रमण में गुरु जन्म कुंडली के भाव 10 में स्थित राशि पर से जा रहा हो।
2. जब शनि गोचर भ्रमण में कुंडली में स्थित अपने मित्र ग्रहों (शुक्र-बुध-राहु) से नव-पंचम योग करता हो और यह योग 1,2,6,9,10, 11 इन स्थानों में होता हो।
3. जब गोचर में गुरु का भ्रमण जन्मस्थ सूर्य-चंद्र-गुरु पर से होता है।
4. दशमेश की महादशा में उसके सहधर्मी ग्रह की अंतर्दशा चल रही हो या ग्रह की महादशा में दशमेश की अंतर्दशा चल रही हो।

नौकरी छूटना - निम्न योगों से नौकरी जाने हेतु देखकर विचार किया जा सकता है-

1. यदि कुंडली में राहु-शनि सूर्य इनमें से दो या तीनों का प्रभाव भाव 10 तथा दशमेश पर पड़ रहा हो तो जातक को नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है। यह फल तब घटित होता जब किसी संबंधित ग्रह की महादशा या अंतर्दशा चल रही होगी।
2. जब गुरु का गोचर वश भ्रमण जन्म कुंडली के भाव 10 से राहु-शनि पर से हो रहा हो तो वह समय नौकरी के लिए अनिष्ट कारक होता है।

पदोन्नति योग- जन्म कुंडली में भाव 10 से पदोन्नति का विचार किया जाता है। निम्न योगों में से कोई योग होने पर पदोन्नति का लाभ मिलता है।

1. भाव 10 में सूर्य या मंगल उच्च या स्वराशि या मित्र राशि में हों और लग्नेश शुभ स्थान में हो।

2. दशम में गुरु या शुक्र या बुध उच्च राशि या स्वराशि या मित्र राशि में हों और उस पर पाप प्रभाव न हो।
3. नवमेश भाव 9 में हो और लग्नेश की लग्न पर दृष्टि हो ।
4. दशमेश का लग्नेश या त्रिकोणेश से संबंध हो। या दशमेश लग्न में हो। या फिर नवमेश-दशमेश -लाभेश का योग हो।
5. द्वितीयेश भाव 10 में उच्च या स्व या मित्र राशि को हो। या लग्नेश भाव 10 में हो और उस पर पाप प्रभाव न हो या फिर भाव 10 पर गुरु की दृष्टि हो।

पदोन्नति में बाधा योग

1. दशम में शनि स्थित हो (यदि उच्च या स्वराशि का न हो)। या शनि लग्न या चतुर्थ में हो (यदि उच्च या स्वराशि का न हो)। या फिर शनि अष्टम में हो।
2. राहु-केतु द्वितीय-अष्टम भाव या चतुर्थ-दशम में हों या भाव 6 या 8 या 12 भाव का स्वामी दशम में हो या फिर दशमेश एवं लग्नेश शनि या राहु या केतु से युत या दृष्ट हों ।

पदोन्नति एवं स्थानांतरण का समय

1. जब शनि गोचर वश जन्म कुंडली में स्थित अपने मित्र ग्रहों-शुक्र, बुध, राहु से 1,2,6,9,10,11 भावों में नवपंचम योग करता है, तब अनुकूल स्थानांतरण तथा पदोन्नति प्राप्त होती है व आकस्मिक लाभ होता है।..
2. जब गुरु का गोचर भ्रमण जन्म कुंडली के भाव 10 स्थित राशि पर से हो रहा हो, तो वह समय भी पदोन्नति के लिए अनुकूल होता है। इस समय में स्थानांतरण भी अनुकूल होते है।
3. कुंडली में भाव 10 एवं दशमेश की स्थिति अच्छी हो तो दशमेश की महादशा या अंतर्दशा में उसके सहधर्मी ग्रह की दशा/ अंतर्दशा में, पदोन्नति के लिए अच्छे अवसर होते हैं।

चित्र मे बायं से दाए :– प्रो. हंसधर झा, प्रो. शत्रुध्न त्रिपाठी वाराणसी, डॉ. रमाकांत पाण्डेय निदेशक संस्कृत संस्थान श्री ऋषि कुमार शुक्ला, पूर्व निदेशक (सी.बी.आई.), डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय (संपादक जीवन वैभव), श्रीमती निशा शर्मा सचिव एस्ट्रोवर्स

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर भोपाल में दो दिवसीय ज्योतिष सम्मेलन संपन्न

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के भोपाल परिसर में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसमें कई वरिष्ठ ज्योतिषाचार्यों ने शोध के आधार पर ज्योतिष में आजीविका पर विचार विषय पर जानकारियां दीं। वाराणसी से आए प्रो. शत्रुघ्न त्रिपाठी ने कहा कि जातक के गर्भ से ही उसके पूरे जीवन का कालखंड सुनिश्चित हो जाता है। उसको जानने के लिए अन्नप्राशन संस्कार के समय कुछ वस्तुओं को बालक से स्पर्श कराने की परंपरा हमारे समाज में है, जिससे पता चलता है कि बालक की रुचि क्या है और वह आगे किस व्यवसाय में जा सकता है।

विवि के कुलपति प्रो. श्रीनिवास के संरक्षण में पहले दिन सम्मेलन के मुख्य अतिथि ऋषि कुमार शुक्ल पूर्व निदेशक केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो थे। इस मौके पर ज्योतिषाचार्य पं. हेमचंद्र पाण्डेय की पुस्तक जीवन मूल्य और नैतिक शिक्षा और ज्योतिष मित्र पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। ज्योतिषी पांडे ने अपनी ओर से कई पुस्तकें विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के लिए भेंट की। निदेशक प्रो. रमाकांत पांडेय ने भी विचार रखे।

विशेष अतिथि डॉ प्रमोद वर्धन ने भी उद्बोधन दिया। सत्र की अध्यक्षता विवि के निर्देशक प्रोफेसर रमाकांत पांडेय ने की। संगोष्ठी के समन्वयक प्रो. हंसधर झा ने अतिथियों का परिचय दिया। विशिष्ट अतिथि नेपाल संस्कृत विवि के विभागाध्यक्ष डॉ प्रमोद वर्धन ने ज्योतिष के नक्षत्रों व होरा के विषय में जानकारी दी। इस मौके पर शोध पत्रों का वाचन हुआ। उद्घाटन के समय मुख्य अतिथि श्री ऋषि कुमार शुक्ला द्वारा बृहस्पति, सूर्य एवं चन्द्रमा का संयोग होने की पूर्व वेला में इस सम्मेलन का अधिक महत्व ज्ञान वर्षा के लिए बताया और सम्मेलन के बाद वासन्तिक नवरात्री का आरंभ होना सभी विद्वानों पर ग्रहों के शुभत्व के प्रभाव से ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए माता सरस्वती से कामना की।

सम्मेलन के दूसरे दिन जीवन वैभव के संपादक डॉ हेमचंद्र पांडेय द्वारा ज्योतिष शास्त्र में आजीविका निर्धारण के अंतर्गत चिकित्सा शिक्षा और चिकित्सा प्रोफेशन पर अपना वक्तव्य पावर पॉइंट के माध्यम से दिया साथ ही एस्ट्रोवर्ष संस्था की सचिव डॉ निशा शर्मा ने केपी पद्धति से फलित विवेचन करते हुए रोजगार का निर्धारण पर अपना उद्बोधन प्रदान किया।

पंच महापुरुष राजयोग के शुभ परिणाम ना प्राप्त होने के कारण

सुप्रिया चौधरी, अहमदाबाद

अक्सर लोग पंच महापुरुष राजयोग या अन्य राजयोगों को अपनी कुंडली में देखकर प्रसन्न हो जाते हैं, किंतु जीवन निकलने के पश्चात भी उन्हें उस राजयोग का फल प्राप्त नहीं हो पाता, यहां मैं पंच महापुरुष राजयोग के बारे में बताना चाहती हूं कि क्यों कोई भी पंच महापुरुष राजयोग जोकि सूर्य, चंद्रमा, राहु, केतु को छोड़कर अन्य पांच ग्रह जो कि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि के द्वारा बनते हैं। जब भी यह पांच ग्रह अपनी स्वराशि या अपनी उच्च राशि में स्थित हो तथा केंद्र त्रिकोण में स्थित हों तो यह पंच महापुरुष राजयोग का निर्माण होता है। यह जन्म कुंडली या चंद्र कुंडली के द्वारा देखा जाता है। परंतु यह राजयोग बहुत ही उत्तम होने के पश्चात अपना पूर्णतया फल जातक को क्यों नहीं दे पाते हैं, इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कर रही हूं। यह राजयोग क्यों फलित नहीं हो पाता है या इसका शुभ फल क्यों प्राप्त नहीं हो पाता, तो इस के निम्न कारण जो मैं समझती हूं इस प्रकार से हैं-

1 - यदि यह राजयोग त्रिकोण में बना है किंतु इस पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यहां पर्याप्त शुभ फल नहीं मिल पाते।

2 - यदि राहु केतु के एक्सेस में ग्रह आ जाए तो भी वह शुभ फल नहीं दे पाते।

3 - यदि शत्रु राशि की युति या दृष्टि संबंध बन जाए तो भी यहां शुभ फल नहीं प्राप्त होते हैं।

4 - यदि 6 ,8 ,12 भाव के स्वामी बन कर राजयोग दे रहे हैं तो भी उनका फल कम हो जाता है।

5 - यदि शत्रु ग्रह का नक्षत्रों से भी संबंध बन जाए या युति बन जाए या किसी भी तरह से संबंध बन जाए तो भी यह राजयोग अपना पूर्ण शुभ फल नहीं दे पाते।

6 - यदि दग्ध राशियों में योग का निर्माण हो तो भी फल नहीं मिल पाते, इसी तरह से यदि खास तिथियों में जन्म लेने के कारण यदि किसी तरह से दग्ध राशियों में यह राजयोग का निर्माण हो तो भी पूर्णतया शुभ फल की प्राप्ति नहीं मिल पाती है।

7 - यदि राजयोग बनाने वाला ग्रह है 6, 8, 12 के नक्षत्रों में हों, तो भी यह शुभ फल नहीं दे पाते।

8 - इसी तरह ग्रह तथा उनके डिस्पोजिटर 6, 8,12 भाव से ना ही संबंध बनाए ना ही युति बनाएं अर्थात किसी भी तरह से 6,8,12 भावों से संबंध नहीं होना चाहिए, संबंध बनने के कारण यहां पर राज्यों का शुभ फल प्राप्त नहीं हो पाता है।

9 - अब जैसे मंगल का रूचक पंच महापुरुष राज योग बन रहा है तथा शनि की तृतीय, सप्तम या दशम दृष्टि पड़ जाए, तो यहां मंगल के शुभ फल जो पंच महापुरुष राजयोग बनने पर मिल सकते थे उसमें कमी अवश्य आएगी। भले ही शनि की अपने ही भाव में दृष्टि क्यों ना हों।

10 - यदि पंच महापुरुष राजयोग देने वाला ग्रह यदि तिथि शून्य राशि में आ जाए तो भी वह अपना पूर्ण फल नहीं दे पाते हैं।

11 - ग्रह का अपना दिगबल भी देख लेना चाहिए यदि दिगबली ग्रह हो तो अपना पूर्ण फल देने के लिए सक्षम होता है।

अंत में यह भी कहना चाहूंगी कि कोई भी राजयोग सभी लग्नों के लिए शुभ फल नहीं दे पाते, हमें कुंडलियों के भाव कारक /बाधक भाव और उनकेंस्वामी का प्रभाव आदि अन्य पहलुओं पर भी विचार करना चाहिए, तभी उसका फल पूर्णतया प्राप्त हो पाता है।

ॐ का जप करना सुस्वास्थ्य और सुखी जीवन का रहस्य

संकलन – आलोक श्रीवास्तव

ॐ का उच्चारण करने से आपके मन में निराशा के भाव उत्पन्न नहीं होते है। आत्म हत्या जैसे विचार भी मन में नहीं आते है। जो बच्चे पढ़ाई में मन नहीं लगाते है या फिर उनकी स्मरण शक्ति कमजोर है, ॐ के उच्चारण से उनकी एकाग्रता बढ़ती है, तनाव में कमी आती है, पाचन शक्ति दुरुस्त होती है।

मन पर नियन्त्रण करके शब्दों का उच्चारण करने की क्रिया को मन्त्र कहते है। मंत्रों का प्रभाव हमारे मन व तन पर पड़ता है। कहा जाता है जैसा रहेगा मन वैसा रहेगा तन। यदि हम मानसिक रूप से स्वस्थ्य हैं तो हमारा शरीर भी स्वस्थ्य रहेगा। मन को स्वस्थ्य रखने के लिए मन्त्र का जाप जरूरी है। ओ3म तीन अक्षरों से बना है। अ उ और म से निर्मित यह शब्द सर्व शक्तिमान है। अदम्य साहस देने वाले ओ3म के उच्चारण मात्र से विभिन्न प्रकार की समस्याओं का नाश होता है। शिव ही सत्य है। शिव ही धरती को ऊर्जा है। जीवन का हर सार शिव में ही समाहित है। शिव की महिमा का वर्णन सभी ग्रन्थों में मिलता है।

सृष्टि के आरंभ में ध्वनि गूंजी ओ3म और पूरे ब्रह्माण्ड में इसकी गूंज फैल गयी। पुराणों में ऐसी कथा मिलती है कि इसी शब्द से भगवान शिव विष्णु और ब्रह्मा प्रकट हुए। ओ3म को सभी मंत्रों का बीज मंत्र ध्वनियों एवं शब्दों की जननी कहा जाता है। ओ3म शब्द के नियमित उच्चारण मात्र से रोग एवं तनाव से मुक्ति मिलती है। धर्माचार्य ॐ का जप करने की सलाह देते हैं। जबकि वास्तुविदों का मानना है कि ओ3म के प्रयोग से घर के वास्तु दोषों को भी दूर किया जा सकता है। ओ3म मंत्र में ब्रह्माण्ड का स्वरूप व त्रिदेवों का वास होता है इसलिए हर मंत्र में इसका उच्चारण होता

है। जैसे ॐ नमो भगवते वासुदेव व ॐ नमः शिवाय। ओ3म मंत्र के जप से मनुष्य ईश्वर के करीब पहुंचता है।

शास्त्रों के अनुसार योग दर्शन में यह स्पष्ट है कि ओम शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बना है। अ, उ, म। प्रत्येक अक्षर ईश्वर के नामों को समेटे हुए है। जैसे अ से व्यापक सर्वदेशीय उपासना करने योग्य है। उ से बुद्धिमान सूक्ष्म सब अच्छाइयों का नियम करने वाला है। म से अनंत अमर ज्ञानवान वास्तव में ईश्वर के अनगिनत नाम ॐ शब्द में ही आ सकते हैं।

अनेक बार ॐ का उच्चारण करने से पूरा शरीर तनावरहित हो जाता है।

अगर आपको घबराहट या अधीरता होती है तो ओ3म् के उच्चारण से उत्तम कुछ भी नहीं!

यह शरीर के विषैले तत्त्वों को दूर करता है, अर्थात तनाव के कारण पैदा होने वाले द्रव्यों पर नियंत्रण करता है।

यह हृदय और खून के प्रवाह को संतुलित रखता है।

इससे पाचन शक्ति तेज होती है।

इससे शरीर में फिर से युवावस्था वाली स्फूर्ति का संचार होता है।

थकान से बचने के लिए इससे उत्तम उपाय कुछ और नहीं।

नींद न आने की समस्या इससे कुछ ही समय में दूर हो जाती है। रात को सोते समय नींद आने तक मन में इसको जप करने से निश्चित नींद आएगी।

कुछ विशेष प्राणायाम के साथ इसे करने से फेफड़ों में मजबूती आती है।

इस तरह से अगर आप ॐ का उच्चारण करेंगे तो निश्चित आपको इसके लाभ भी प्राप्त होंगे। इस महामंत्र का जाप करना हर कष्टों का निवारण करना है। ऐसा शास्त्रों में बताया गया है।

ॐ एक महामंत्र है। ॐ अद्भुत है। यह संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतीक है। बहुत-सी आकाश गंगाएँ इसी तरह फैली हुई है। ब्रह्म का अर्थ होता है विस्तार फैलाव। ओंकार ध्वनि के शताधिक अधिक अर्थ दिए गए हैं। यह ॐ अनंत तथा निर्वाण की अवस्था का प्रतीक है। ॐ को ओम कहा जाता है। उसमें भी बोलते वक्त ओ पर ज्यादा जोर होता है। इसे प्रणव मंत्र भी कहते हैं। इस मंत्र का प्रारंभ है अंत नहीं। यह ब्रह्मांड की अनाहत ध्वनि है। इसे अनहद भी कहते हैं। तपस्वी और ध्यानियों ने जब ध्यान की गहरी अवस्था में सुना की कोई एक ऐसी ध्वनि है जो लगातार सुनाई देती रहती है शरीर के भीतर भी और बाहर भी। हर कहीं वही ध्वनि निरंतर जारी है। और उसे सुनते रहने से मन और आत्मा शांती महसूस करती है। तो उन्होंने उस ध्वनि को नाम दिया ओ3म। साधारण मनुष्य उस ध्वनि को सुन नहीं सकता लेकिन जो भी ओ3म का उच्चारण करता रहता है, वह इस ध्वनि को महसूस कर सकता है। परमात्मा से जुड़ने का साधारण तरीका है ॐ का उच्चारण करते रहना।

ॐ **उच्चारण की विधि-** प्रातः उठकर पवित्र होकर ओंकार ध्वनि का उच्चारण करें। का उच्चारण पद्मासन, अर्धपद्मासन, सुखासन, वज्रासन में बैठकर कर सकते हैं। ॐ जोर से बोल सकते हैं। इससे शरीर और मन को एकाग्र करने में मदद मिलेगी। दिल की धड़कन और रक्तसंचार व्यवस्थित होगा। इससे मानसिक बीमारियाँ दूर होती हैं। अप्रिय शब्दों से निकलने वाली ध्वनि से मस्तिष्क में उत्पन्न काम . क्रोध .मोह भय और लोभ की वृत्तिया खत्म अथवा धीरे धीरे कम होने लगती है। कम से कम 108 बार ओ3म का उच्चारण सुखी जीवन के लिए उत्तम है ।

कन्या के विवाह, पति ससुराल पक्ष की जानकारी के ज्योतिषीय सूत्र

पं. के.आर.उपाध्याय
ज्योतिषाचार्य भोपाल मप्र

लाडली बेटी के विवाह से पूर्व सिर्फ वर-वधू का गुण मिलान करना ही ज्योतिष में पर्याप्त नहीं होता, अतः योग्य विद्वान ज्योतिर्विद अगर कन्या की ही षोडशवर्गीय कुंडली को सूक्ष्मता से देख ले तो ससुराल की समस्त जानकारी पूर्व में ही जान सकता है । अपनी कन्या का विवाह करने के लिए प्रत्येक व्यक्ती .... वर-वधू की कुंडली का गुण मिलान करते हैं। किंतु इसके पूर्व उन्हें यह देखना चाहिए कि लड़की का विवाह किस उम्र में, किस दिशा में तथा कैसे घर में होगा? उसका पति किस स्वभाव का, किस सामाजिक स्तर का तथा कितने भाई-बहनों वाला होगा? लड़की की जन्म कुंडली से उसके होने वाले पति एवं ससुराल के विषय में सब कुछ स्पष्टतः पता चल सकता है।

ज्योतिषीय फलित शास्त्र के अनुसार लड़की की जन्म कुंडली में लग्न से सप्तम भाव उसके जीवन, पति, दाम्पत्य जीवन तथा वैवाहिक संबंधों का भाव है। इस भाव से उसके होने वाले पति का कद, रंग, रूप, चरित्र, स्वभाव, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय या . कार्यक्षेत्र, परिवार से संबंध आदि की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कन्या की कुंडली के त्रतीय और नवम भाव के आधार पर देवर, जेठ, ननदों का व्योरा, स्वभाव आदि।

इसी तरह दशम भाव से सासूजी, चतुर्थ भाव से स्वसुर, एवं अष्टम भाव से उनके कुटुंब परिवार की स्थिती और स्वभाव को जाना जा सकता है ।

ससुराल और विवाह से से संबंधित अन्य बातों को जानने के ज्योतिष सिद्धांतों को हम आगे समझाने का प्रयास करते हैं।।

कितनी दूरी पर होगा ससुराल

सप्तम भाव में अगर वृष, सिंह, वृश्चिक या कुंभ राशि स्थित हो, तो लड़की की

शादी उसके जन्म स्थान से निकट के स्थान अथवा 90 किलोमीटर के अंदर ही होगी। यदि सप्तम भाव में चंद्र, शुक्र तथा गुरु हों, तो लड़की की शादी जन्म स्थान के समीप होगी। यदि सप्तम भाव में चर राशि मेष, कर्क, तुला या मकर हो, तो विवाह उसके जन्म स्थान से 200 किलोमीटर के अंदर होगा। अगर सप्तम भाव में द्विस्वभाव राशि मिथुन, कन्या, धनु या मीन राशि स्थित हो, तो विवाह जन्म स्थान से 80 से 100 किलोमीटर की दूरी पर होगा। यदि सप्तमेश सप्तम भाव से द्वादश भाव के मध्य हो, तो विवाह विदेश में होगा या लड़का शादी करके लड़की को अपने साथ लेकर विदेश अथवा दूर शहर चला जाएगा।

कब किस उम्र में होगा विवाह

यदि जातक या जातका की जन्म लग्न कुंडली में सप्तम भाव सप्तम भाव में सप्तमेश मंगल पापी ग्रह से प्रभावित हो तो विवाह देश काल अनुसार समय पर होगा। शुक्र ग्रह युवा अवस्था का द्योतक है। सप्तमेश शुक्र पापी ग्रह से प्रभावित हो, तो 25 वर्ष से 28की आयु में विवाह होगा। चंद्रमा सप्तमेश होकर पापी ग्रह से प्रभावित हो, तो विवाह विलम्ब से तथा 24 वे वर्ष के बाद की आयु में होगा। बृहस्पति सप्तम भाव में सप्तमेश होकर पापी ग्रहों से प्रभावित न हो, तो शादी 27-28 वें वर्ष में होगी। सप्तम भाव को सभी ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखते हैं तथा सप्तम भाव में शुभ ग्रह से युक्त हो कर चर राशि हो, तो जातिका का विवाह दी गई आयु में संपन्न हो जाता है। यदि किसी लड़की या लड़के की जन्मकुंडली में बुध स्वराशि मिथुन या कन्या का होकर सप्तम भाव में बैठा हो, तो विवाह निर्णय शीघ्र होकर देशकाल की औसत आयुमें विवाह होगा।

आयु के जिस वर्ष में गोचरस्थ गुरु लग्न, तृतीय, पंचम, नवम या एकादश भाव में आता है, उस वर्ष शादी होना निश्चित समझना चाहिए। परंतु शनि की दृष्टि सप्तम भाव या लग्न पर नहीं होनी चाहिए। अनुभव में देखा गया है कि लग्न या सप्तम में बृहस्पति की स्थिति होने पर उस वर्ष शादी हुई है।

किस दिशा में विवाह होगा

जहां तक विवाह की दिशा का प्रश्न है, ज्योतिष के अनुसार गणित करके इसकी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। जन्मांग में सप्तम भाव में स्थित राशि के आधार पर शादी की दिशा ज्ञात की जाती है। उक्त भाव में मेष, सिंह या धनु राशि एवं सूर्य और शुक्र ग्रह होने पर पूर्व दिशा, वृष, कन्या या मकर राशि और चंद्र, शनि ग्रह होने पर दक्षिण दिशा, मिथुन, तुला या कुंभ राशि और मंगल, राहु, केतु ग्रह होने पर पश्चिम दिशा, कर्क, वृश्चिक, मीन या राशि और बुध और गुरु ग्रह होने पर उत्तर दिशा की तरफ शादी होगी। अगर जन्म लग्न कुंडली के सप्तम भाव में कोई ग्रह न हो और उस भाव पर अन्य ग्रह की दृष्टि न हो, तो बलवान ग्रह की स्थिति राशि में शादी की दिशा समझनी चाहिए। एक अन्य नियम के अनुसार शुक्र जन्म लग्न कुंडली में जहां कहीं भी हो, वहां से सप्तम भाव तक गिनें। उस सप्तम भाव की राशि स्वामी की दिशा में शादी होनी चाहिए। जैसे अगर किसी कुंडली में शुक्र नवम भाव में स्थित है, तो उस नवम भाव से सप्तम भाव तक गिनें तो वहां से सप्तम भाव वृश्चिक राशि हुई। इस राशि का स्वामी मंगल हुआ। मंगल ग्रह की दिशा दक्षिण है। अतः शादी दक्षिण दिशा में करनी चाहिए।

कैसा मिलेगा जीवनसाथी

कुंडली में सप्तमेश अगर शुभ ग्रह (चंद्रमा, बुध, गुरु या शुक्र) हो या सप्तम भाव में स्थित हो या सप्तम भाव को देख रहा हो, तो लड़की का पति सम आयु या दो-चार वर्ष के अंतर का, गौरांग और सुंदर होना चाहिए। अगर सप्तम भाव पर या सप्तम भाव में पापी ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु या केतु का प्रभाव हो, तो बड़ी आयु वाला अर्थात लड़की की उम्र से 5 वर्ष बड़ी आयु का होगा। सूर्य का प्रभाव हो, तो गौरांग, आकर्षक चेहरे वाला, मंगल का प्रभाव हो, तो लाल चेहरे वाला होगा। शनि अगर अपनी राशि का उच्च न हो, तो वर काला या कुरूप तथा लड़की की उम्र से काफी बड़ी आयु वाला होगा। अगर शनि उच्च राशि का हो, तो, पतले शरीर वाला गोरा तथा उम्र में लड़की से बड़ा होगा।

सप्तमेश अगर सूर्य हो, तो पति गोल मुख तथा तेज ललाट वाला, आकर्षक, गोरा सुंदर, यशस्वी एवं राजकर्मचारी होगा। चंद्रमा अगर सप्तमेश हो, तो पति शांत चित्त वाला गौर वर्ण का, मध्यम कद तथा, सुडौल शरीर वाला होगा। मंगल सप्तमेश हो, तो पति का शरीर बलवान होगा। वह क्रोधी स्वभाव वाला, नियम का पालन करने वाला, सत्यवादी, छोटे कद वाला, शूरवीर, विद्वान तथा भ्रातृ-प्रेमी होगा तथा सेना, पुलिस या सरकारी सेवा में कार्यरत होगा।

देवर, जेठ और ननदें

लड़की की जन्म लग्न कुंडली में सप्तम भाव से तृतीय भाव अर्थात नवम भाव उसके पति के भाई-बहन का स्थान होता है। उक्त भाव में स्थित ग्रह तथा उस पर दृष्टि डालने वाले ग्रह की संख्या से 2 बहन, मंगल से 1 भाई व 2 बहन, बुध से 2 भाई 2 बहन वाला कहना चाहिए। लड़की की जन्मकुंडली में पंचम भाव उसके पति के बड़े भाई-बहन का स्थान है। पंचम भाव में स्थित ग्रह तथा दृष्टि डालने वाले ग्रहों की कुल संख्या उसके पति के बड़े भाई-बहन की संख्या होगी। पुरुष ग्रह से भाई तथा स्त्री ग्रह से बहन समझना चाहिए।

कैसा होगा पतिपक्ष का मकान

लड़की की जन्म लग्न कुंडली में उसके लग्न भाव से तृतीय भाव पति का भाग्य स्थान होता है। इसके स्वामी के स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री होने से पंचम और राशि वृद्धि से या तृतीयेश से पंचम जो राशि हो, उसी राशि का श्वसुर का गांव या नगर होगा। प्रत्येक राशि में 9 अक्षर होते हैं। राशि स्वामी यदि शत्रुक्षेत्री हो, तो प्रथम, द्वितीय अक्षर, सम राशि का हो, तो तृतीय, चतुर्थ अक्षर मित्र क्षेत्री हो, तो पंचम, षष्ठम अक्षर, अपनी ही राशि का हो तो सप्तम, अष्टम अक्षर, उच्च क्षेत्री हो, तो नवम अक्षर प्रसिद्ध नाम होगा। तृतीयेश के शत्रुक्षेत्री होने से जिस राशि में हो उससे चतुर्थ राशि ससुराल या भवन की होगी। यदि तृतीय से शत्रु राशि में हो और तृतीय भाव में शत्रु राशि में पड़ रहा हो ,तो दसवी राशि ससुर के गांव की होगी। लड़की की कुंडली में दसवां भाव उसके पति का भाव होता है। दशम भाव अगर शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, या दशमेश से युक्त या दृष्ट हो, तो पति का अपना मकान होता है। राहु, केतु, शनि, से भवन बहुत पुराना होगा। मंगल ग्रह में मकान जीर्ण और टूटा होगा। सूर्य, चंद्रमा, बुध, गुरु एवं शुक्र से भवन सुंदर, मजबूत व बहुमंजिला होगा। अगर दशम स्थान में शनि बलवान हो, तो मकान भव्य मिलेगा।

पति की नौकरी या प्रोफेशन

लड़की की जन्म लग्न कुंडली में चतुर्थ भाव पति का राज्य भाव होता है। अगर चतुर्थ भाव बलयुक्त हो और चतुर्थेश की स्थिति या दृष्टि से युक्त सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र की स्थिति या चंद्रमा की स्थिति उत्तम हो, तो अच्छी नौकरी का संयोग बनता है।

पति की आयु- लड़की के जन्म लग्न में द्वितीय भाव उसके पति की आयु भाव है। अगर द्वितीयेश शुभ स्थिति में हो या अपने स्थान से द्वितीय स्थान को देख रहा हो, तो पति दीर्घायु होता है। अगर द्वितीय भाव में शनि स्थित हो या गुरु सप्तम भाव, द्वितीय भाव को देख रहा हो, तो भी पति की दीर्घआयु होती है।।

इन सभी मूल ज्योतिषीय सिद्धातों के सूक्ष्म परीक्षण एवं षोडशवर्गीय कुंडली के गहन विश्लेषण से वैवाहिक जीवन के प्रत्येक पहलू को विद्वान ज्योतिषी सहजता से जान सकता है।

ज्योतिष शास्त्र में आजीविका योग

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
सम्पादक जीवन वैभव
भोपाल म .प्र.

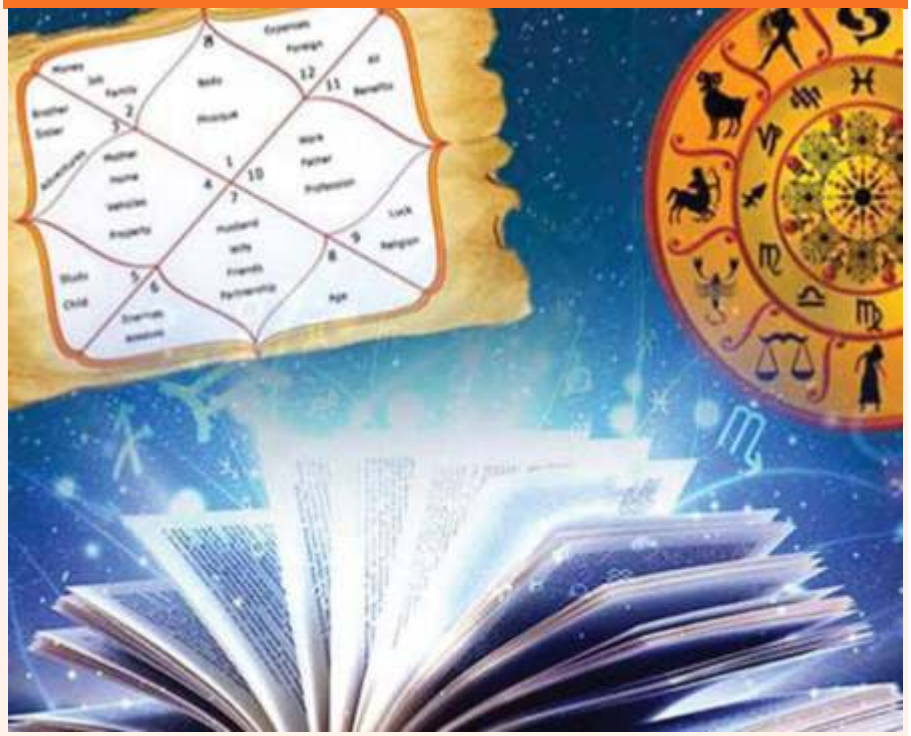

भारतीय ज्योतिष ऋषि महात्माओं के द्वारा खगोल अनुसंधान करके हमारे हमे तथा परिवार/समाज को जीवन जीने के लिए ज्योतिष शास्त्र को मार्गदर्शक के रुप में प्रदान किया है यह वेद का अंग है।

आजीविका के लिए निम्न बिन्दु पर विचार करना आवश्यक है -

1 जातक का वंशानुगत संस्कार एवं सामाजिक परिवेश।
2 जातक की अभिरुचि
3 जातक के जन्म समय के ग्रह और नक्षत्र
4 जन्म समय और विद्यार्थि काल में चलरही महादशा
5 जन्मलग्न नक्षत्र/ जन्म नक्षत्र /दशानाथ का नक्षत्र

इसके साथ ही वर्ग कुंडलियों का भी देखा जाना आवश्यक है क्योंकि

1 जन्मांग के द्वितीय भाव तथा होरा से धन-संपत्ति
2 जन्मांग के दशम भाव तथादशमांश से कर्म फल
3 चतुर्थ भाव मातृसुख मित्र तथा समृद्धि के साथ चतुर्थांशसे भाग्यफल
4 नवांश से पत्नीकाभाग्य
5 जन्मांग के साथ षष्ठांश कुण्डली का अवलोकन

उपरोक्त बिंदुओं पर विचार करने के उपरांत ही जन्मकुंडली से किसी भी जातक का जन्म समय की जन्म कुंडली बनाकर बाल्यकाल में ही शिक्षा में विषय का निर्धारण करना उत्तम होता है शिक्षा के लिए जो मापदंड ग्रहों के अनुसार निर्धारित हैं वह निम्नानुसार हैं

सूर्य ग्रह

औषधि रसायन ,ज्योतिष, भूगोल, प्रशासन, विद्या, नेत्र चिकित्सा, राजनीति और जीव विज्ञान।

चन्द्र ग्रह

रसायन जल, वस्त्र , उद्योग वनस्पति विज्ञान, होटल प्रबंधन, द्रव विज्ञान, मनोविज्ञान, संगीत, जंतु विज्ञान, डेरी एवं पत्रकारिता प्रमुख है।

मंगल ग्रह

मैकेनिकल इलेक्ट्रॉनिकल इलेक्ट्रिकल सिवीलआदि इंजीनियरिंग शिक्षा, शल्य चिकित्सा ,भौतिकी ,पुलिस युद्ध कला, सैन्य विज्ञान, भूमि विज्ञान, वायुयान, खेलकूद, इत्यादि।

बुध ग्रह

गणित , ज्योतिष , वैदिक अध्ययन, इंजीनियरिंग , दर्शनशास्त्र ,पत्रकारिता, प्रकाशन , मीडिया , लेखन प्रकाशन के कार्य, वक्ता, प्रवचन कर्ता आदि।

गुरु ग्रह

आरोग्य शास्त्र, अर्थशास्त्र, धर्म, अध्यात्म शिक्षा, बीजगणित , दर्शन, वेद विद्या, चिकित्सा आदि का ज्ञान।

शुक्र ग्रह

संगीत, नृत्य कला, अभिनव फिल्म, फैशन डिजाइनिंग, रत्न, ललित कला, काव्य साहित्य और अन्य विविध प्रकार की कलात्मक शिक्षा।

शनि ग्रह

न्यायिक शिक्षा, भूगर्भ शिक्षा, सर्वेक्षण, इंजीनीयरिग, औद्योगिकी शिक्षा, भवन निर्माण, मुद्रण कला, प्रिंटिंग आदि की शिक्षा।

राहु ग्रह

तर्कशास्त्र, हिप्नोटिज्म विष चिकित्सा, इलेक्ट्रॉनिक्स एंटी-बायोटिक्स, खनिज विज्ञान, पर्वत आदि का ज्ञान

केतु ग्रह

गुप्त विद्या,मंत्र तंत्र से संबंधित विद्या, रिसर्च के कार्य की विधा की शिक्षा भूमि सम्बधित ज्ञान, किसी भी कार्य का शोध की इच्छा।

उपरोक्त शिक्षा के आधारपर आजीविका हेतु निर्णय लेकर बचपन के समयमे ही आजीविका का लक्ष्य निर्धारण करना चाहिए ताकि धन और समय का अपव्यय नही हो। चिकित्सा शिक्षा में शरीर के विभिन्न अंगो के विशेष ज्ञान प्राप्त करना आजके समय मेंआवश्यक हो गया है। चिकित्सा में उच्च शिक्षा केलिए ग्रहों के अनुसार शरीर के अंगो का विवेचन निम्नानुसार है।

सूर्य ग्रह

नेत्र रोग,पित्त प्रकृति, हृदय सम्बधित,सिरदर्द, पाचन संस्थान।

चन्द्र ग्रह

मानसिक स्थिति नेत्र विकास शीत प्रकोप फेफड़े संबंधी विकार।

मंगल ग्रह

पेट से पीठ तक शरीर के अंग नाक, कान, फैफड़े और शारीरिकशक्ति।

बुध ग्रह

रक्ताल्पता, मतिभ्रम, उदर रोग,सिर दर्द, वात रोग, गुप्त रोग संग्रहणी, मंदाग्नि,शूल, दमा फुसफुस और नेत्र रोग।

गुरु ग्रह

उदर रोग,पित्त विकार, लीवर के रोग,मोटापा,कफ चर्बी की वृद्धि,मुर्छा, गुल्म और शोथ

शुक्र ग्रह

अंडाशय की बीमारी गुर्दा कब वीर्य नेत्र विषय वासना कामेच्छा मूत्राशय रोग प्रमेय मांस के रोग।

शनि ग्रह

हड्डी पसली के विकार मांस पेशी पिंडली घुटने स्नायु नाक के रीढ़ की हड्डी और पांव के दर्द से संबंध रहता है।

राहु ग्रह

मोटापा चिंता जननी रोग शारीरिक साहस आत्म बल का कम अधिक होना।

केतु ग्रह

पांव के तलवे संधि रोग कुष्ठ रोग चर्म रोग भूख नहीलगने संबंधीहाथ पांव के विकार और स्नायु विकार किस ग्रह से संबंध रखते हैं।

उपरोक्त ग्रहों को जन्मकुण्डली के आधार पर विशेष परीक्षण करने के बाद आजीविका का निर्णय किया जा सकता है।

चिकित्सा शिक्षा और प्रोफेशन का योग

आज के युग में विद्यार्थी और माता-पिता की इच्छा होती कि उसकी संतान चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर सफल चिकित्सक बनकर समाज की सेवा करें। अपने फलित ज्योतिषअनुभव और कुछ कुण्डलियो में देखे गए मुख्य योग के अनुसार पाए गए सूत्र निम्नानुसार है।

1 यदि कुंडली में कर्क राशि या मंगल बलवान हो तथा लग्न अथवा दसवें भाव में स्थित हो और राहु का किसी भी रूप में मंगल से संबंध हो तो जातक डॉक्टर बनता है।

2 केतु गहनता का बारीकी से अध्ययन करने का छायाग्रह है जो हमेशा चिकित्सक की कुंडली में बली होता है सूर्य मंगल एवं गुरु भी बलवान होने चाहिए क्योंकि सूर्य आत्मा का कारक है एवं गुरु बहुत ज्ञान का दायक है जोकि गंभीर मरीज को ठीक करने का क्षमतावान होता है।

3 छठवां भाव रोग का होता है उसका स्वामी यदि दशम भाव से संबंध कर रहा हो तो भी चिकित्सा शिक्षा की तरफ इंगित करता है।

4 किसी भी लग्न या राशि में सूर्य शनि या सूर्य मंगल शनि अथवा चंद्र मंगल शनि चंद्र बुध शनि .वैसे कोई दो ग्रह केंद्राधिपत्य योग रखते हो युति में कोई ग्रह अस्त नही हो तो व्यक्ति डाक्टर की शिक्षा लेकर अच्छा डाक्टर बन सकता है।

5 मंगल शुक्र या शनि की राशि का लग्न होऔर उनमें मंगल शनि या चंद्र शनि या सूर्य चन्द्र के साथ अलग अलग तीन ग्रहो की युति हो या दृष्टि हो तो जातक चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करता है।

6 यदि मंगल लग्न मे उच्च स्वगृही दृष्टि से लग्न,कर्म अथवा पंचम भाव को दृष्टि करता है ऐसी स्थिति में सफल चिकित्सक / सर्जन होने के योग बनते हैं।

7 आत्म कारक ग्रह भाग्य स्थान का स्वामी दोनों वर्गोत्तम मे होकर कारकांश कुंडली में लग्न से केंद्र में हो तो रस रसायन का ज्ञाताऔर सफल चिकित्सक होता है।

8 षष्टम भाव जोकि रोग और सेवा (नौकरी)का भाव है इसमें राहु और शनि हो तथा सूर्य और मंगल की पंचम भाव में युति हो ऐसे व्यक्ति बड़े संस्थान में सफल सर्जन हो सकते हैं।

9 बुध सम राशि में हो और वृषभ वृश्चिक कुम्भ राशि का लग्न हो तथा धन भाव का स्वामी (केन्द्र या त्रिकोण)शुभ भाव में हो साथ ही मंगल चंद्र अच्छी स्थिति में होने पर ऐसा सफल चिकित्सक बन सकता है।

10 एक अच्छे सफल चिकित्सक के लिए गुरु और चंद्रमा का बलवान होना आवश्यक है।

11.यदि अष्टम भाव का संबंध लग्न पंचम नवम भाव तथा उसभाव स्वामी के साथ शुभ ग्रहों से हो रहा है तो गहराई से निर्णय लेकर रोगी को ठीक करने की क्षमता रखने वाला चिकित्सक होता है।

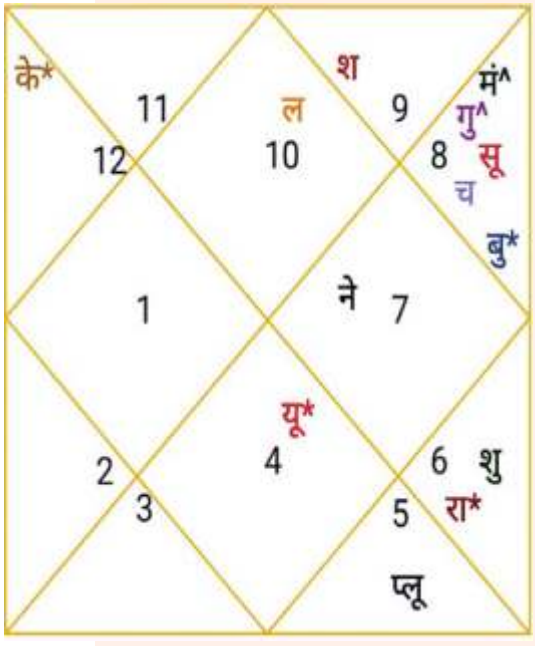

यह कुण्डली शासकीय प्रथम श्रेणी चिकित्सा अधिकारी जोकि जिलास्तर के पद पर पदस्थ हैं इनके एकादश भाव में सूर्य गुरु चंद्र मंगल एवं बुध की युति पंचमेश शुक्र नवम भाव में स्थित है। नवमांश कुण्डली के दशम भाव मे गुरु तथा पंचम भाव में बुध शनि की युति है। लग्न में चन्द्र तथा इसके शुक्र से दृष्ट होने से मिलनसार स्वभाव तथा रोगी से मृदुव्यवहार करके चिकित्सा करने वाले सफल चिकित्सक है।

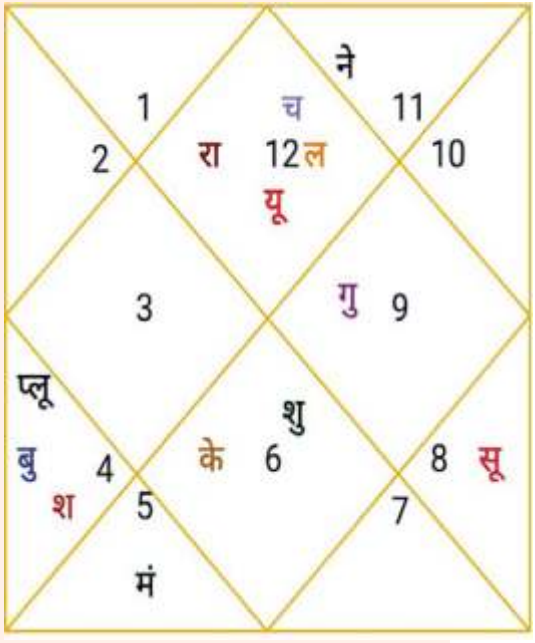

कुण्डली (1) जन्म दिनांक 1 दिसंबर 1959 सवेरे 10:32 स्थान भोपाल, मध्यप्रदेश

एक प्रसिद्ध चिकित्सक की कुंडली है जोकि स्वतंत्र रूप से अपना अस्पताल संचालन कर रहें है धनु लग्न में सूर्य बुध एवं शुक्र की युति जोकि लग्न के अधिपति गुरु से नवम दृष्टि में हैं पंचम भाव का स्वामी मंगल अष्टम दृष्टि से पंचम भाव को लग्नेश गुरु की उपस्थिति में दृष्टि दे रहे हैंनवांश कुंडली में पंचमेश शनि तृतीय भाव में तथा कर्म भाव पर मंगल उच्च का होकर सप्तम दृष्टि दे रहा है जोकि सफल चिकित्सक के योग बनाता है ।

कुण्डली (2) जन्म दिनाक 9 जनवरी 1965 सवेरे 7 बजे सीहोर, मध्यप्रदेश

* वक्री ^ अस्त

लग्नेश शनि लाभ भावमे शुक्र के साथ धनेश गुरु की दृष्टिमे नवमांश में गुरु नवम मे केतु के साथ।

चर्मरोग विशेषज्ञ

कुण्डली नं. 3

26 नवम्बर 1989 दिन में 13.15 जन्म स्थान, सीधी

* वक्री ^ अस्त

लग्न में मंगल केतु दशम में शुक्र चतुर्थेश तथा राशि स्वामी गुरु की दृष्टि में

आयुर्वेद चिकित्सक

नवांश में शुक्र दशम तथा मंगल से केतु सप्तम

कुण्डली नं. 4

दिनांक 28 जुलाई 1950 सवेरे 10.50 स्थान सुवासरा, मंदसौर

* वक्री ^ अस्त

लग्नेश गुरु जोकि दशमेश भी है द्वादश भाव में मंगल नवमेश द्वितीयेश की चतुर्थ दृष्टी नवमांश में गुरु नवम मंगल केन्द्रमे सप्तमस्थ

प्रसिद्ध नैत्र चिकित्सक

कुण्डली नं. 5

दिनांक 2 फरवरी 1986 सबेरे 10.50 जन्मस्थान, भोपाल

क्या दैवीय शक्तियां हमारी मदद करती हैं?

आचार्य अखिलेश्वर कुमार पाण्डेय
फतहपुर शिवहर (बिहार)

दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्हें उनके सत्कर्मों और कल्याण कारी धनात्मक सोच रखकर कार्य करने वाले व्यक्ति को अपने जीवन में दैवीय सहायता मिलती है। अपने कर्म के अनुसार किसी को ज्यादा तो किसी को कम सहयोग मिलता है। कुछ व्यक्तित्व तो ऐसे हैं जिनके माध्यम से दैवीय शक्तियां अच्छा काम करवाती हैं। इसे कैसे पहचानें कि दैवीय शक्तियां मदद कर रही है उसकी

आराधना-पाठ पूजा -प्रार्थना का असर हो रहा है? इन 9 संकेतों से हम इसे महसूस कर सकते हैं-

1. अच्छा चरित्र रखने की प्रवृत्ति

शास्त्र कहते हैं कि दैवीय शक्तियां सिर्फ उसकी ही मदद करती है, जो दूसरों के दुख को समझता है, जो बुराइयों से दूर रहता है, जो नकारात्मक विचारों से दूर रहता है, तथा सदैव धनात्मक विचारधारा रखता है तथा जो नियमित अपने इष्ट की आराधना करता है। यदि आपकी गतिविधियां ऐसी ही है; तो निश्चित ही दैवीय शक्तियां आपकी मदद कर रही हैं।

2. ब्रह्म मुहूर्त में उठने की आदत

विद्वान लोग कहते हैं कि यदि आपकी आंखें प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् रात्रि 3 से 5 के बीच अचानक ही खुल जाती हैं तो आप समझ जाएं कि दैवीय शक्तियां आपके साथ हैं, क्योंकि यही वह समय होता है जबकि देवता की जाग्रत रहती हैं। यदि आप अपने बचपन से लेकर जवानी तक इस समय के बीच उठते रहे हैं तो समझ जाएं कि दैवीय शक्तियां आपके माध्यम से आपसे कुछ शुभकार्य करवाना चाहती हैं !

3. सपने में देवदर्शन का भ्रमण देखना

यदि आपको बारंबार मंदिर या किसी देव स्थान के ही सपने आते रहते हैं। सपने में आप आसमान में ही उड़ते रहते हैं या सपने में आप देवी-देवताओं से वार्तालाप करते रहते हैं तो आप समझ जाइए कि दैवीय शक्तियां आप पर कृपावान हैं।

4. पूर्वाभास होते रहना

यदि आपको आने वाली घटनाओं का पहले से ही ज्ञान हो जाता है या आपको पूर्वाभास हो जाता है तो आप समझ जाइए कि दैवीय शक्तियों की आप पर कृपा है।

5. पारिवारिक प्रेम का बढ़कर रहना

आपकी पत्नी, बेटा, बेटी और आपके सभी परिजन आपकी आज्ञा का पालन कर रहे हैं, वे सभी आपसे प्यार करते हैं एवं आप भी उनसे प्यार कर रहे हैं तो आप समझ जाइए कि दैवीय शक्तियां आप से प्रसन्न हैं।

6. भाग्य से भी शुभत्व वृद्धि

जीवन में आपको अचानक से लाभ प्राप्त हो जाता है। आपके किसी भी कार्य में किसी भी प्रकार की आपको बाधा उत्पन्न नहीं होती है और सभी कुछ आपको बहुत आसानी से मिल जाता है, तो आप समझ जाइए कि दैवीय शक्तियां आपकी मदद कर रही हैं।

7. सुगंधित वातावरण का अहसास

यदि कभी-कभी आपको यह महसूस होता है कि मेरे आसपास कोई है या आपको बिना किसी कारण ही अपने आसपास सुगंध का अहसास हो तो समझ जाइए कि अलौकिक शक्तियां आपके आसपास आपकी मदद के लिए हैं।

8. सुहानी हवा का अहसास होना

आप पूजा कर रहे हैं और यदि आपको लगे कि अचानक सुहानी हवा का झोंका या प्रकाश पुंज आ गया और शरीर में प्रसन्नता का अनुभव होकर सिहरन दौडने लगे। तो समझिए कि देवी या देवता आप पर प्रसन्न हैं।

9. किसी की आवाज सुनाई देना

आप रात्रि में गहरी नींद में सो रहे हैं और आपका यात्रा का समय होने वाला है अथवा किसी शुभकार्य के मुहूर्त के लिए जल्दी उठना था और आप गहरी नींद मे है लेकिन स्वप्नावस्था में जैसा लगता है कि किसी ने मुझे आवाज दी और आप अचानक ही उठ जाते हैं, लेकिन फिर आपको आभास होता है कि यहां तो कोई नहीं है। लेकिन आवाज तो स्पष्ट थी। ऐसा आपके साथ कई विशिष्ट अवसर पर हो जाता है तो आप समझ जाइए कि आप पर अपने सत्कर्मों के कारण किसी अलौकिक शक्ति की अपार कृपा है ।

अतःसत कार्य करते रहें धनात्मक विचार रखें ताकि दैवशक्तियां आप पर कृपा बनाए रखें।

जन्म कुंडली में कुछ चुनिन्दा धन योग

रमेश वायगांवकर, ग्वालियर
ज्योतिषाचार्य

विभिन्न प्रमुख ज्योतिषीय ग्रन्थों वृहत पराशर होरा शास्त्र, वृहतजातक, जातक तत्व, होरा सार, सारावली, मानसागरी, जातक परिजात आदि विभिन्न विभिन्न ग्रन्थों मे दिये हुए जो धन योगों का विवरण प्राप्त होता है, उसे संकलित कर पाठकों के अध्ययन हेतु प्रस्तुत हैं। परन्तु उनमें मुख्य जो अक्सर जन्मकुंडलियों में हमने पाये हैं तथा आज की परिस्थिति में उपयोगी होते हुए फलदायी भी हैं। जातक को धन मिलने का कारण इन युतियों से ही बनता है-

1. भाग्येश बुध से लाभेश मंगल कार्येश शुक्र सुखेश मंगल पंचमेश शुक्र लगनेश शनि धनेश शनि का गोचर से जन्म के बुध के साथ गोचर हो।

2. कार्येश शुक्र का लाभेश मंगल सुखेश मंगल लगनेश शनि पंचमेश शुक्र धनेश शनि से गोचर से जन्म के कार्येश शुक्र के साथ गोचर हो।

3. लाभेश मंगल का धनेश शनि लग्नेश शनि से गोचर से जन्म के मंगल के साथ युति बने । 4. लग्नेश शनि का सुखेश मंगल धनेश शनि पंचमेश शुक्र से गोचर से जन्म के शनि के साथ योग बने।

15. धनेश शनि का सुखेश मंगल पंचमेश शुक्र से योगात्मक रूप जन्म के शनि के साथ बने।

6. सुखेश मंगल के साथ पंचमेश शुक्र से गोचर से जन्म के मंगल के साथ योगात्मक रूप बने। अगर भाग्येश और षष्ठेश एक ही ग्रह हो।

7. मकर लगन की कुंडली में भाग्येश और षष्ठेश बुध एक ही ग्रह है, यह धन आने का कारण तो बनायेंगे लेकिन अधिकतर मामले मे धनेश, लगनेश सुखेश, कार्येश के प्रति धन को या तो नौकरी से प्राप्त करवायेंगे

या कर्जा से धन देने के लिये अपनी युति को देंगे।

8. यदि चन्द्रमा से 6, 7, 8वें भाव में समस्त शुभ ग्रह विद्यमान हों और वे शुभ ग्रह क्रूर राशि में न हों और न ही सूर्य के समीप हों तो ऐसे योग (चन्द्राधियोग) में उत्पन्न होने वाला जातक धन, ऐश्वर्य से युक्त होता है आचार्य महावीर जी के अनुसार महान धन दायक योग बनता है।

9. अनफा व सुनफा योग जो चन्द्र से द्वितीय, द्वादश भाव में सूर्य को छोड़कर अन्य ग्रहों की स्थिति द्वारा बनते हैं, जातक अपने पुरुषार्थ से धन को प्राप्त करता है। या करने वाला होता है।

10. एक भी शुभ ग्रह केन्द्रादि शुभ, स्थान में स्थित होकर, उच्च का हो व शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो धनाढ्य तथा राजपुरुष बना देता है।

11. पुष्फल योग एक धन और यश देने वाला योग है, जिसमें चन्द्राधिष्ठित, राशि के स्वामी का लग्नेश के साथ होकर केन्द्र में बलवान होना अपेक्षित होता है।

12. लग्नेश द्वितीय भाव में तथा द्वितीयेश लाभ भाव में हो। चंद्रमा से तीसरे, छठे, दसवें, ग्यारहवें स्थानों में शुभ ग्रह हों। पंचम भाव में चंद्र एवं मंगल दोनों हों तथा पंचम भाव पर शुक्र की दृष्टि हो।

13. चंद्र व मंगल एकसाथ हों, धनेश व लाभेश एकसाथ चतुर्थ भाव में हों तथा चतुर्थेश शुभ स्थान में शुभ दृष्ट हो।

14. द्वितीय भाव में मंगल तथा गुरु की युति हो। गज केसरी योग जिसमें बृहस्पति और चन्द्र का केन्द्रीय समन्वय होता है, धन एवं यश देने वाला होता है।

15. यदि कुंडली में कर्क राशि में बुध और शनि 11 वें भाव में हो तो जातक महाधनी होता है। (जा.त.)

16. जिस जातक की कुंडली में लाभ भाव में गुरू हों और पंचम भाव में सूर्य स्वगृही हों तो जातक की कुंडली में महाधनी योग बनता है।

17. कर्क राशि का चन्द्र लग्न भाव में गुरू और मंगल के साथ हो तो

महाधनी योग बनता है।

18. धनेश अष्टम भाव में तथा अष्टमेश धन भाव में हो। पंचम भाव में बुध हो तथा लाभ भाव में चंद्र-मंगल की युति हो !

19. गुरु नवमेश होकर अष्टम भाव में हो। वृश्चिक लग्न कुंडली में नवम भाव में चंद्र व बृहस्पति की युति हो ।

20. मीन लग्न कुंडली में पंचम भाव में गुरु चंद्र की युति हो ।

21. कुंभ लग्न कुंडली में गुरु व राहु की युति लाभ भाव में हो।

22. चंद्र, मंगल, शुक्र तीनों मिथुन राशि में दूसरे भाव में हों।

23. कन्या लग्न कुंडली में दूसरे भाव में शुक्र व केतु हो।

24. तुला लग्न कुंडली में लग्न में सूर्य-चंद्र तथा नवम में राहु हो।

25. मीन लग्न कुंडली में ग्यारहवें भाव में मंगल हो।

26. यदि जन्मकुंडली में गुरु लग्न भाव में 'चन्द्रमा' और मंगल के साथ हो तो महाधनी योग होता है।

27. यदि स्वराशि का शुक्र लग्न भाव में चन्द्र और सूर्य से युक्त अथवा दृष्ट हो तो महाधनी योग होता है।

28. यदि कुंडली में लाभेश धनभाव में और धनेश-लाभ भाव में हो तो जातक को धन लाभ बहुत अधिक कम प्रयास से प्राप्त होता है।

29. धनेश और लाभेश केन्द्रों में हो तो भी जातक को धन लाभ होता है।यदि धनेश लाभ भाव में हो तो जातक धनी होता है।

30. जन्म लग्न या पंचम भाव में मकर या कुंभ राशि का शनि हो और बुध लाभ स्थान में हो तो आचार्य महावीर जैन के अनुसार जातक को सब प्रकार से धन लाभ होता है।

31. यदि जन्म लग्न में कर्क लग्न हो और लग्न में चं0, वृ0 तथा मं0 हो तो जातक को अचानक धन लाभ होता है।

32. धन स्थान का स्वामी धन स्थान में, लाभ स्थान का अधिपति लाभ स्थान, धनेश, लाभेश लाभ स्थान में स्वराशि या मित्र राशि का अथवा उच्च का हो तो जातक धनवान होता है।

33. यदि जन्मकुंडली में लाभेश और धनेश लग्न में हो तो दोनों मित्र हों तो धन योग बनता है और यदि लग्न का स्वामी धनेश और लाभेश से युक्त हो तो महाधनी योग बनता है।

34. यदि धनेश लग्न में और लग्न का स्वामी धन भाव में हो तो बिना प्रयत्न किये जातक धनवान होता है।

35. धन भाव में 'गु' शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक धनवान होता है।

36. जब जन्मकुंडली में धन स्थान में शुक्र हो, शुभ ग्रह युक्त तथा दृष्ट हो तो जातक धनवान होता है। जन्मकुंडली में यदि ग्रह नीच राशि में भी स्थित हो तो भी यदि उसकी नीच राशि का स्वामी लग्न में या केन्द्र में स्थित हो अथवा उसकी उच्च राशि का स्वामी यदि लग्न से केन्द्र में स्थित हो तो नीच भंग योग होता है आचार्य महावीर जैन के अनुसार व जातक धनी होता है।

37. जब लग्न भाव का स्वामी त्रिकोण में स्थित हो, धन भाव का स्वामी लाभ भाव में हो, तथा धन भाव पर धनेश की दृष्टि हो तो कुंडली में महालक्ष्मी योग बनता है।

38. यदि भाग्य स्थान का स्वामी अपनी उच्च राशि में या मूल त्रिकोण अथवा स्वराशि में केन्द्र में स्थित हो, तो भी जातक धनी होगा।

39. ग्यारहवें और बारहवें भाव का अच्छा संबंध होने पर जातक लगातार निवेश के जरिए चल-अचल संपत्तियां खड़ी कर लेता है। पांचवां भाव मजबूत होने पर जातक सट्टा या लॉटरी के जरिए विपुल धन प्राप्त करता है।

40. किसी भी जातक के पास किसी समय विशेष में कितना धन हो सकता है, इसके लिए हमें उसका दूसरा भाव, पांचवां भाव, ग्यारहवां और बारहवें भाव के साथ इनके अधिपतियों का अध्ययन करना होगा। आचार्य महावीर जैन के अनुसार इससे जातक की वित्तीय स्थिति का काफी हद तक सही आकलन हो सकता है। इन सभी भावों और भावों के अधिपतियों की स्थिति सुदृढ़ होने पर जातक कई तरीकों से धन कमाता हुआ अमीर बन जाता है।

41. किसी भी लग्न में पांचवें भाव में चंद्रमा होने पर जातक सट्टा या अचानक पैसा कमाने वाले साधनों से कमाई का प्रयास करता है। चंद्रमा फलदाई हो तो ऐसे जातक अच्छी कमाई कर भी लेते हैं।

42. कारक ग्रह की दशा में जातक सभी सुख भोगता है और उसे धन संबंधी परेशानियां भी कम आती हैं।

43. सातवें भाव में चंद्रमा होने पर जातक साझेदार के साथ व्यवसाय करता है लेकिन धोखा खाता है। 44. छठे भाव का ग्यारहवें भाव से संबंध हो तो, जातक ऋण लेता है और उसी से कमाकर समृद्धि पाता है।

यह ग्रन्थों में दिये हुए योगों का संकलन मात्र है विद्वत ज्योतिषी को चाहिए की अगर किसी योग का कुंडली में अध्ययन करते वक्त राशि, नक्षत्र, ग्रहों के अंश, भावों के अंश, ग्रहों के बलाबल तथा दशा एवं गोचर का भी आकलन करे तभी सटीक फल कथन हो सकेगा।

जीवन की दौड़ में एक घटना की झलक

यदुनाथसिह राठौर, इंदौर

*लेखक एक सेवानिवृत अधिकारी है तथा फलित ज्योतिष पर अनुसंधान कर रहें है अपने सम्पर्क में आए परिवारो के अनुभवजन्य उदाहरण काल्पनिक नाम प्रस्तुत करते हुए जानकारी प्रस्तुत की है जो कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीचीन प्रतीत होती है जिसे समाज हित में पाठको की जानकारी हेतु प्रस्तुत है - **सम्पादक***

हमारे परिचित व्यक्ति जोकि विशुद्ध भारतीय एवं पूजापाठी परिवार से हैं लेकिन वर्षों से वे एकाकी जीवन गुजारते आ रहे थे। गत वर्ष ही उनका 72 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ। उनकी पत्नी दिव्या आज नितांत अकेली है। यद्यपि वो अभी स्वस्थ और क्रियाशील है लेकिन उनके दोनो पुत्र निखिल अमेरिका और नितिश कनाडा में पदस्थ है। यहां दिव्या बहिन अकेली और चंद रिश्तेदारों के भरोसे टिकी है। हालांकि रिश्तेदार, सम्बन्धी भी अब बुजुर्ग अशक्त हो रहे हैं वो क्या खाक मदद करेंगे? रात बिरात अचानक दिव्या बहन को कुछ हो गया तो कौन दौड़कर आएगा? हम जैसे पड़ोसी शायद कुछ मदद कर दें लेकिन परिवारजनों की बात ही अलग होती है। आज जमाना बहुत अलग हो गया है। हर व्यक्ति अपने आप में व्यस्त और त्रस्त है। लोगों की अपनी समस्याएं कम नहीं हैं। वॉट्सएप के इस युग में लोग उपदेश, सलाह तो बहुत बांटते हैं लेकिन ठोस सहायता, प्रत्यक्ष मदद के लिए लोगों के पास समय ही नहीं है। ऐसा नहीं की समय मिलता नहीं लेकिन हर मनुष्य अपनी कंफर्ट जोन में ऐसा बंधा है कि उसके लिए परोपकार के लिए समय नहीं है। हां टीवी सीरियल, अपने मनोरंजन और आराम के लिए पर्याप्त समय है।

दिव्या उस उच्च शिक्षित मध्यम वर्ग परिवार को रेखांकित करती है जिन्हे अपनी युवावस्था में बड़ी इच्छा रही थी की उनके बच्चे पढ़ लिख कर विदेश जाएं और वहीं बस जाएं। लेकिन अब उसके प्रति परिणाम सुखद नहीं हैं। बच्चे अब इंडिया आना ही नहीं चाहते। कुछ तो विवशताएं जैसे कि वहां से दीर्घ कालीन अवकाश आसानी से नहीं मिलता साथ ही आने जाने का भारी किराया। वे सोचते हैं भारत आकर भी मिलेगा क्या? माता पिता के दुख दर्द और ढेर सारी शिकायतों के पुलिंदे! कौन और क्यों इसमें रुचि लेगा? कभी कभी सामर्थ्यवान संतान माता पिता को ही विदेश ले जाकर कुछ महीने रख लेते हैं। लेकिन उससे क्या? उन्हें तो फिर लौटना ही है अपने देश और पुनः अपने वृद्धावस्था की समस्याओं और नितांत एकाकीपन से जूझना ही है। ये तो कोई स्थाई समाधान नहीं है।

घर आंगन तो ऐसे लोगों ने बहुत बड़ा बनवा रखे हैं कि दो तीन परिवार आराम से रह लें। लेकिन दस कमरों के भव्य किंतु वीरान से मकान की दीवारों के बीच दो खांसते हुए बुजुर्ग ही मिलेंगे। यही हाल मैने बहुत से परिवारों का देखा है। मकान बड़े लेकिन रहवासी मात्र दो या तीन। नौकर चाकर भी हैं लेकिन उनका साथ कितना मात्र दो घंटे और क्या? हालांकि आज इंटरनेट, सोशल मीडिया का युग है। माता पिता दूर से भी वॉट्सएप, फेसबुक, मैसेंजर,वेफियोग्राफी के माध्यम से बच्चों से जुड़े हो सकते हैं। लेकिन सचाई क्या है कि प्यार तो कम है माता पिता से, है तो बस दिखावा ही।

एकाकी और अशक्त आयुवृद्ध बुजुर्गों की लंबी सूची है। लेकिन ठहरिए, ये अपना भारत देश है। ठीक इसके विपरित यहां अधिकतर निम्न मध्यम वर्गीय परिवार भी हैं जहां रहने की पर्याप्त जगह भी नहीं है और रहने वालों को संख्या आठ से दस है। कहीं कहीं मुंबई, कोलकाता जैसे घनी आबादी वाले महानगरों में तो स्थिति बड़ी विकट है जहां ये समस्या है कि घर में समान रखें तो इंसान को रखना दुभर है। ऐसी विषमता क्यों? ऐसे परिवार जहां सदस्य ज्यादा हैं और रहने की जगह सीमित है वहां झगड़े, फसाद, मर्यादा-हीनता परिलक्षित होती है। आए दिन के झगड़ों से आस पास के लोग भी आहत होते हैं।

हमारे एक पुराने बॉस नितांत अकेले थे। दूध वाला, अखबार वाला बाहर ही अखबार और दूध की थैली रख जाते थे। कुलकर्णी जी आठ साढ़े आठ बजे तक सामग्री समेट लेते थे। एक दिन तीन दिन तक सामग्री यों ही पड़ी रही तो पड़ोसियों को सूचित किया गया। द्वार तोड़ने पर पता चला कि कुलकर्णी जी दो दिन पहले ही दिवंगत हो चुके हैं। बेटी और पत्नी बंगलौर में थे। पुत्र अखिलेश दुबई था।

बेटी और पत्नी तो अंतिम संस्कार में आ सके लेकिन पुत्र तो सप्ताह भर बाद ही आ सका।

जो परिवार बड़े हैं और सीमित जगह और असीमित परेशानियों से जूझ रहे हैं उनकी समस्या पर्याप्त शिक्षा न होना है। सामान्य पढ़ाई पूर्ण कर युवाओं को सामान्य जॉब स्वीकार कर अपना और परिवार का जीवन निर्वाह करना होता है। आवश्यकताओं और महंगाई के चक्रव्यूह में उलझे ऐसे परिवार टूटने, बिखरने की कगार पर जा पहुंचते हैं। यक्ष प्रश्न ये उठता है कि हमारे सामाजिक ढांचे की इतनी विषम संरचना क्यों है? एक दृश्य है जहां उच्च शिक्षा है, दिखावा है, वृथा अभिमान है कि हमारी संतान विदेशों में रहकर ऊंचा जीवन जी रहे हैं। लेकिन वास्तविकता में सभी स्तरीय जीवन नहीं जी रहे होते हैं। कई बच्चे वहां भी संघर्ष और कठिनाइयों में जीवनयापन करते हैं और वापस स्वदेश इसलिए नहीं आते कि लोग मखौल न उड़ावें। उधर बच्चे भी वेल सैटल्ड नहीं और इधर मां बाप भी अकेले। ज्यादा अशक्तता होतो फिर वृद्धाश्रम जाने के सिवा कोई विकल्प नहीं बचता।

दोनो ही स्थिति में अवसाद है, निराशाएं है। अब समस्या का समाधान हमे ही खोजना चाहिए। जीवन में आयु की निरंतरता के बारेमे कोई भी व्यक्ति नहीं जानता कि जिंदगी कब तक है। लेकिन धन सम्पति वैभव ही सबकुछ नहीं। हमारी भारतीय प्राचीन परम्परा में संयुक्त परिवार की अवधारणा है तथा वेदो में मातृदेवो भव पितृ देवो भव तथा अतिथि देवो भव कहा गया है लेकिन यह सब लुप्त होते दिखाई देकर वृद्ध जन को वृद्धावस्था में शरण लेना पड़ रही है।

विदेश में अपनी आजीविका के रहते उन संतानो के वृद्ध माता पिता असहाय हो जाते है कुछ नौकरो के भरोसे जीवन जीते है। कुछ ऐसे ही हाल में गुजर जाते हैं, कुछ अशक्त असहाय हो जाते हैं। और युवा रिश्तेदार, सगे संबंधी लोग कोई रुचि नहीं दिखाते। क्योंकि उन्हें अपने झमेलों से अवकाश नहीं है। ऐसे में बचपन से ही बच्चों या संतानों में ये धारणा पुष्ट करें कि स्वदेश में ही नौकरी व्यवसाय चुनें और माता पिता, भाई बहनों का साथ न छोड़ें। जो बड़े परिवार हैं किंतु आय कम है वे भी बच्चों को कम उम्र में पारिवारिक बोझ न दें और पर्याप्त से अधिक शिक्षा की ओर प्रवृत्त करें। अच्छी शिक्षा, तकनीकी प्रतिभा से ही संतान सामर्थ्यवान बनेंगी और परिवार का संबल। विदेश घूमने जाएं जरुर किंतु वहां बस जाने का विचार या स्वप्न त्याग दें।

परिवार का गठजोड़ सशक्त होगा तो ही समाज मजबूत होगा। समाज सशक्त होगा तो देश मजबूत होगा। याद रखें कि ना तो हमारे बुजुर्ग समाज और परिवार के लिए अथवा न खुद के लिए अभिशप्त हैं बल्कि अनुभवजन्य वृद्धहमारे लिए ज्ञान की धरोहर है साथ ही हमारा युवा वर्ग समाज की प्रगति के लिए एक सशक्त उत्तराधिकारी हैं। दोनों ही हमारे प्रगतिशील समाज के लिए सामाजिक ढांचे का अभिन्न अंग हैं। जिनके द्वारा ही उत्तम समाज का निर्माण संभव है।

अपने आप से अच्छा बनना ही सबसे बड़ी सफलता है

यह विचार हमें याद दिलाता है कि हमें अपने आप पर ध्यान देना चाहिए और स्वयं को निरंतर सुधारते रहना चाहिए। हमें दूसरों से प्रेम भाव रखना चाहिये लेकिन सबसे पहले अपने स्वयं से प्यार एवं शुद्धि तथा पवित्रता रखना चाहिए और अपने व्यक्तित्व को स्वीकार करना चाहिए। जब हम स्वयं को अच्छा बनाते हैं, तभी हम दूसरों की मदद कर सकते हैं और जीवन में सफलता हासिल कर सकते हैं।

कोर्ट कचहरी विवाद में विजय के कुछ विशेष उपाय

डॉ. आर के पाठक 'मयंक'
धर्म शिक्षक भारतीय सेना

ज्योतिष के सहायता से कुंडली के विश्लेषण के द्वारा यह जानकारी प्राप्त हो सकती है कि आपको कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने पड़ेंगे या नहीं और मुकदमे में आपके विजय की संभावना कितनी होगी? कुंडली में यदि आपको न्यायालय मामलों में उलझने के योग हैं और यदि आपको अदालत में किसी कानूनी समस्या का सामना करना पड़ रहा है तो विजय प्राप्ति के कुछ उपाय किए जा सकते हैं।

सबसे पहले आपको यह जानना चाहिए कि मुकदमा कब दायर करें? और यदि कोई दायर किया है तो उसका जवाब कब दायर करें?

इसके लिए दो मुहूर्त होते हैं:

1) यायी जय योग

(मुकदमा दायर करने का मुहूर्त)

यदि आप खुद ही किसी समस्या से पीड़ित होकर अदालत का सहारा लेना चाहते हैं तो आपको मुकदमें में विजय प्राप्ति हेतु शुभ मुहूर्त में ही केस दायर करना चाहिए। इसके लिए पंचांग में आपको यायी जय योग मिलेगा। तिथि और नक्षत्रों के संजोग से यह योग बनता है। यायी जय जोग में मुकदमा दायर करने से विजय की संभावना अधिक रहती है।

2) स्थाई जय योग (मुकदमे का जवाब दायर करने का मुहूर्त)

इसके विपरीत यदि आपने आपके ऊपर किसी ने मुकदमा किया है तो उसका जवाब दाखिल करने के लिए आपको पंचांग में स्थाई जय योग देखना चाहिए। जिस दिन यह मुहूर्त बन रहा हो उस समय अवधि में आपको केस का जवाब दाखिल करना चाहिए। इससे आपके विजय की संभावना बढ़ जाती है।

मुकदमे में विजय प्राप्ति के उपाय

यदि आप के खिलाफ अदालत में केस चल रहा है और काफी समय बीतने के बाद भी आप सफलता प्राप्त नहीं कर पाए हैं, तो नीचे दिए गए कुछ उपायों को करके आप शीघ्र ही अदालती मामले से छुटकारा पा सकते हैं और आपके विजय की संभावना भी बढ़ जाती है।

मंगलवार को सायंकाल हनुमान जी के मंदिर जाएं। उन्हें चमेली का तेल और सिन्दूर लगाएं। इसके बाद उन्हें तुलसी के पत्तों की माला अर्पित करें। फिर **ॐ नमो भगवते रामदूताय** का जाप करें। ये प्रयोग नौ मंगलवार को करें।

साथ ही लाल वस्त्र धारण करके हनुमान जी के सामने बैठें। उनके समक्ष घी का दो मुखी दीपक जलाएं। एक सिरा हनुमान जी की तरफ और दूसरा स्वयं की तरफ हो। फिर **ॐ हं हनुमते नमः** का कम से कम तीन माला जाप करें। ये प्रयोग तीन मंगलवार की रात्रि को करें।

अगर आप किसी झूठे मुक़दमे में फंस गए हैं तो प्रातः सूर्य को रोली और लाल मिर्च के 7 बीज मिलाकर जल अर्पित करें। उसके बाद 7 बार क्लाकवाइज परिक्रमा करें। इसके बाद सूर्य की रोशनी में बैठकर इस विशेष चौपाई का तीन माला जाप करें।

*चौपाई है

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

यह प्रयोग मंगलवार से शुरू करके सत्ताईस दिनों तक करें। साथ में मंगलवार को लाल गाय को गुड़ और रोटी भी खिलाएं।

जब भी आप अदालत में जाएँ तो किसी भी हनुमान मंदिर में धूप अगरबत्ती जलाकर, लड्डू या गुड़ चने का भोग लगाकर एक बार हनुमान चालीसा और

बजरंग बाण का पाठ करके संकटमोचन बजरंग बली से अपने मुकदमे में सफलता की प्रार्थना करें। इससे आपको निसंदेह सफलता प्राप्त होगी।

आप जब भी अदालत जाएं तो गहरे रंग के कपड़े ही पहन कर जाएं।

अपने अधिवक्ता को उसके काम की कोई भी वस्तु जैसे कलम या डायरी उपहार में अवश्य ही प्रदान करें।

अपने कोर्ट के केस की फाइलें घर में बने मंदिर या धार्मिक स्थान में रखकर ईश्वर से अपनी सफलता, अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करें।

यदि ग्यारह हकीक पत्थर लेकर किसी मंदिर में चढ़ा दें और कहें कि मैं अमुक कार्य में विजयी होना चाहता हूँ तो निश्चय ही उस कार्य में विजय प्राप्त होती है।

यदि आप पर कोई मुसीबत आन पड़ी हो कोई रास्ता न सूझ रहा हो या आप कोर्ट कचहरी के मामलों में फँस गए हों, आपका धैर्य जबाब देने लगा हो, जीवन में केवल संघर्ष ही रह गया हो, अक्सर हर जगह अपमानित ही महसूस करते हों, तो आपको सात मुखी, पंचमुखी तथा ग्यारह मुखी रुद्राक्ष धारण करने चाहिये। नौ ग्रहों की अनुकूलता के लिए एक से लेकर नौ मुखी अर्थात नौ ग्रह रुद्राक्ष माला गणेश रुद्राक्ष के साथ धारण करना विशेष लाभदायक होता है।

मुकदमे में विजय हेतु कोर्ट कचहरी में जाने से पहले 5 गोमती चक्र को अपनी जेब में रखकर, जो स्वर चल रहा हो वह पाँव पहले कोर्ट में रखें अगर स्वर ना समझ आ रहा हो तो दाहिना पैर पहले रखें, मुकदमे में निर्णय आपके पक्ष में होने की संभावना प्रबल होगी।

मुकदमे में विजय प्राप्ति का यंत्र दाहिने बाजू में धारण करना भी मुकदमे में सफलता दिलाता है।

यदि किसी व्यक्ति का कोर्ट कचहरी में कोई मुकदमा चल रहा हो और उसमें उसको दण्ड मिलने की या हारने की सम्भावना हो तो वह अपने वजन के बराबर कोयले को बहते पानी में बहाये, ईश्वर से अपने इस जन्म और पिछले जन्मो के पापों के लिए क्षमा मांगे और अपनी किसी भी बुरी आदत को हमेशा के लिए त्याग दे , इससे उसको न्यायालय से लाभ मिलने के योग बढ़ जायेंगे।

मुकदमें अथवा किसी भी प्रकार के वाद विवाद में सफलता हेतु लाल या सिंदूरी मूंगा त्रिकोण की आकृति का सोने या तांबे या मिश्रित अंगूठी में बनवाकर उसे दाहिने हाथ के अनामिका उंगली में धारण करें, इससे सफलता की संभावना और अधिक हो जाती है। मूंगा धारण करने से पहले कुंडली का विवेचन भी कराकर देख लेना चाहिए कि मूंगा धारण करना उचित है या नहीं।

यदि उपरोक्त में से एक या दो भी उपाय अपनी समस्या के अनुसार करते हैं तो निश्चित रूप से आपको मुकदमें में विजय प्राप्ति होगी।

नोट- यदि विशेष समस्या हो तो बटुक भैरव मंत्र या बगलामुखी मंत्र का अनुष्ठान कराना विशेष लाभदायक होता है।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श

ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

बी–14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755–2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com

परामर्श के लिए पूर्व समय लेना आवश्यक :

अष्टमभाव पूर्वजन्मों के संचित कर्मों का रहस्य

ज्योतिष शास्त्री
पं. आर.पी. ओझा, ग्वालियर

ज्योतिष ग्रंथों में इस भाव को गंभीर रोगों, दुर्घटनाओं, व्यवधानों, मृत्यु, आदि सभी अशुभ कारक्तवों का स्थान ही कहा गयाहै।काल पुरुष में इस स्थान पर वृश्चिक राशि पर मंगल को स्वामित्व दिया है। योग एवं तंत्र की भाषा में इस स्थान को मूलाधार चक्र के नाम से जाना जाता है।ज्योतिष में अक्सर पढ़ने को मिलता है कि भाव 8 गुप्त स्थान है। तंत्र ग्रन्थ के अनुसार -

यही तो वह गुप्त स्थान है जहाँ जन्म जन्म के संचित कर्म चेतन एवं अवचेतन आदि विराजमान रहते हैं। यही स्थान जन्म एवं पुनर्जन्म तथा मृत्यु का स्थान है। यह जन्म जन्मान्तर से विद्यमान आत्मशक्ति का स्थान है। गत जन्मो में अर्जित ज्ञान , विज्ञान ,बुद्धि और प्रतिभा, दैहिक ,दैविक भौतिक आदि आदि का उपभोग हम इस जन्म में इसी आत्म ज्ञान के कारण करते हैं। कभी कभी हम देखते हैं कि सहसा ही किसी जातक के जीवन में अचानक एक ऐसी प्रतिभा का उदय होता है जिसका अहसास जातक को भी नही होता। यह आत्म शक्ति है। वैज्ञानिक भाषा में इसे Energy of Motion, Rintic Energy (Kriyamaan) Energy of Gravitation, Heat Power , Energy Electricity , Electrical Energy आदि नाम से परिभाषित किया गया है। (यह मत किसी एक योग एवं तंत्र के साहित्य से संकलित है। लेखक अपने समय के विख्यात तांत्रिक ज्योतिषी तथा उच्च स्तर के साधक रहे थे)।

यही सब कारण हैं कि हम ज्योतिष की भाषा में इस स्थान को गुप्त रहस्य का भाव कहते हैं। अब चूंकि जन्म जन्मान्तर से यह जो आत्म शक्ति है वह यह सूचित करती है कि जातक के पूर्व में संचित कर्म कैसे होंगे।

अक्सर हम संचित कर्मों का लेखा भाव 5-9 आदि से देखते हैं परन्तु इतनी गहराई से न जाकर भाव 8 को गंभीर रोग का कारक ही मान लेते हैं। अतः भाव 8 का समग्र अध्ययन ग्रह, राशि एवं तत्व आदि से करना उचित होगा। यही से यह भी ज्ञात करना उचित होगा कि जातक के पूर्व संचित कर्म , आत्म शक्ति ,चेतन ,अवचेतन कैसा है। ग्रहों एवं राशियों, योगो ,आदि के शुभत्व एवं अशुभत्व से इसे ज्ञात किया जासकता है।

प्रायः ज्योतिष में अष्टम भाव को अशुभ भाव के रूप में परिभाषित किया गया है। किसी ग्रह का संबंध अष्टम भाव से होने पर उसके कुफल ही कहे गए हैं लेकिन वास्तविकता ऐसी नहीं है। जितने भी सफल व्यक्ति हुए उनमें से अनेक व्यक्तियों की जन्मपत्रियों में अष्टमेश का संबंध पंचम अथवा लग्न पंचम अथवा लग्न भाव से रहा है। ऐसे योग वाले व्यक्तियों के पास कोई न कोई कला या विशेषता अवश्य रहती है जो उन्हें ईश्वर से या पूर्व जन्म से जो भी माने उपहार स्वरूप प्राप्त होता है।

पंचमेश और अष्टमेश का आपसी संबंध होने पर आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनते हैं। ऐसे योग में व्यक्ति शेयर मार्केट,सट्टेबाजी अथवा लॉटरी द्वारा धन प्राप्त कर सकता है।

जन्मपत्रिका में अष्टम भाव को मृत्यु का भाव कहा जाता है। मृत्यु का भाव होने के साथ ही यह भाव गूढ़ विद्या तथा

अकस्मात धन प्राप्ति का भाव भी कहलाता है। इसके अतिरिक्त अष्टम भाव से आयु निर्णय, मृत्यु का कारण, दुर्गम स्थान में निवास, संकट, पूर्वार्जित धन का नष्ट होना, किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति का प्राप्त होना, पूर्वजों से प्राप्त संपत्ति, मन की पीड़ा, मानसिक क्लेश, मृत्यु का कष्टपूर्वक होना, गुप्त विद्या व पारंपरिक विद्याओं में निपुणता, अचानक धनप्राप्ति, लम्बी यात्राएं, विदेश में जाकर नौकरी करना, गड़े खजाने की प्राप्ति, कुएं आदि स्थानों में गिरने से मृत्यु आदि का भी विचार किया जाता है।

अष्टम भाव से त्रिकोण का संबंध उत्तम होता है। अष्टम भाव का लग्न या पंचम भाव से संबंध होने पर व्यक्ति गूढ़ विद्याओं व पारंपरिक विद्याओं को जानने वाला तथा किसी विशेष कला में पारंगत होता है।

अष्टमेश द्वाददेश के साथ संबंध बनाते हुए यदि पंचम भाव से युति करे तो व्यक्ति घर से दूर अथवा विदेश में प्रवास कर अध्ययन करता है तथा धनार्जन भी घर से दूर रहकर करता है। ऐसे व्यक्ति का मस्तिष्क बहुत ही कुशाग्र होता है। वह हर तथ्य को बारीकी के साथ सोचता और समझता है। वह ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता है तथा किसी भी प्रकार की समस्या में पड़ने पर अपने धैर्य को नहीं छोड़ता है।

अष्टम भाव में विपरीत राजयोग होने पर व्यक्ति निश्चित रूप से अपने कार्य क्षेत्र में उन्नति करता है। अष्टमेश का सबंध नवम भाव से बहुत ही उत्तम होता है। ऐसे व्यक्ति दर्शन के विशेष ज्ञाता होता है। कई बड़े दार्शनिक, संत एवं सन्यासियों की जन्मपत्रिका में इस प्रकार के योग देखे जाते हैं।

ऐसे योग में व्यक्ति में पूर्वानुमान की क्षमता बहुत ही दृढ़ होती है। प्रत्येक कार्य करते हुए उसके दूरगामी परिणामों को वह देख लेता है। अष्टम भाव अथवा अष्टमेश का संबंध धन एवं कर्म भाव के साथ होने पर व्यक्ति शीघ्र उन्नति करता है। यह उन्नति किसी प्रकार के हथकंडों को अपनाकर प्राप्त की हुई होती है। जो व्यक्ति अपने जीवन में गलत राह चुनकर उन्नति प्राप्त करते हैं, उनकी जन्मपत्रिका में यह योग देखा जा सकता है। ऐसे योग में व्यक्ति अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर अपनी कुशाग्र गति से येन-केन-प्रकारेण सफलता प्राप्त कर लेता है।

अष्टम भाव अथवा अष्टमेश का लाभ भाव से संबंध आकस्मिक लाभ को दर्शाता है। हालांकि स्वास्थ्य की दृष्टि से यह योग उत्तम नहीं होता है परन्तु आर्थिक दृष्टि से यह योग अत्यंत उत्तम है।

व्यक्ति को अनपेक्षित धन की प्राप्ति होती है तथा पूर्वजों से धन प्राप्ति के योग बनते हैं। अष्टम भाव का शेष भावों से संबंधभी शुभ तथा अशुभ दोनों ही परिणाम प्रदान करने वाला होता है। हालांकि स्वास्थ्य की दृष्टि से अष्टमेश का प्रबल होना उत्तम नहीं माना जाता है परन्तु प्रबल अष्टमेश का त्रिकोण भाव से संबंध बनाना मनुष्य को रहस्यमयी बनाता है। स्त्री की जन्मपत्रिका में अष्टम भाव से उसके होने वाले जीवनसाथी की आयु का विचार किया जाता है। अष्टमेश की दशा-अंतर्दशा उसके जीवन में होने वाले बड़े परिर्वतन को दर्शाती है। इस दशा में उसके विवाह होने के योग भी बनते हैं।

इसी भाव से पूर्वजों का भी विचार किया जाता है। पितृदोष का विचार भी इसी भाव से किया जाता है। मनुष्य के पूर्वार्जित कर्मों तथा मनुष्य की आयु का विचार भी इसी भाव से किया जाता है। सामान्य तौर पर फलकथन में इस भाव के महत्व पर ध्यान नहीं दिया जाता है। जब मनुष्य किसी बड़े दुःख/संकट में पड़ता है तभी अष्टम भावकी तरफ ध्यान जाता है। मनुष्य की उन्नति में इस भाव का बहुत ही महत्व है। यह बहुत ही विचित्र भाव है जो अपने गर्भ में अनेक प्रकार के फलों को समेट कर रखता है। चूंकि जन्मपत्रिका में सभी भावों और भावेशों के आपसी तालमेल से ही किसी व्यक्ति के जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का निर्माण होता है। अतः फलादेश कथन में इस भाव के महत्व को कदापि नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

यहाँ मैं एक उदारहण लेता हूँ। एक छोटे बीज में वट वृक्ष पूर्व से विद्यमान होता ऐसे ही पता के वीर्य अंश में उसके पिता तथा सात जन्मों के गुण अवगुण निहित होते हैं। चिकित्सा शास्त्र में अनके अनुवांशिकी बिमारिओं का छुपा रहना सिद्ध हो चूका है। तब क्यों न हम मान कर चले कि जातक का भाग्य चक्र जिसे हम ज्योतिष में ग्रहों और भावों राशियों आदि आदि से जो फल कथन का विश्लेषण करते हैं उन सब का निचोड़ या रहस्य इस भाव 8 में छिपा रहता है? अक्सर एक ही योग में जन्मे अनके जातकों के जीवन चक्र अलग अलग रहते हैं ऐसा क्यों? मेरी बुद्धि से जब मूलाधार संचित कर्मों का ही मूलभूत आधार है तब क्यों न हम इस भाव का गहराई से अध्ययन करे और उसके उपरांत में समग्रता लेकर कोई निचोड़ तय करें।

यह लेख कुछ विद्वानों को अटपटा लग सकता है परन्तु यदि हम उपाय के लिए तंत्र की गहराई में जाकर जब अपने आप की खोज में गहराई से उतर ने में सक्षम होगेतभी इसका रहस्य पता कर सकेंगे। ज्योतिष में फल कथन मोटे तोर पर कभी सही हो जाता है और कभी पूर्णतः गलत। इन सब का कारण यह रहस्य है कि अपने ही अंदर छिपी अपार उर्जा को हम समझ नहीं पाते। कुछ फलित विद्वान तो अंतर्दृष्टि की संज्ञा देने लगते हैं जो कि एक इन्हीं छिपी उर्जाओं का एक मात्र हिस्सा है।

फलित में अश्विनी व भरणी नक्षत्र

पं. अरविंद कुमार पाण्डेय
भोपाल

पृथ्वी पर जन्म लेने वाला हर व्यक्ति किसी न किसी नक्षत्र से प्रभावित रहता है, इन्ही नक्षत्रों के प्रभाव से मनुष्य सही और गलत को परिभाषित कर सकता है। आज से इस नक्षत्र श्रृंखला के जरिये हम जानेंगे नक्षत्रो को सो आज का हमारा विषय है अश्विनी नक्षत्र, भारतीय वैदिक ज्योतिष की गणनाओं के लिए महत्वपूर्ण माने जाने वाले 27 नक्षत्रों में से अश्विनी को पहला नक्षत्र माना जाता है। अश्विनी राशि चक्र का पहला नक्षत्र है जो 0 डिग्री 0 मिनट से 13 डिग्री 20 मिनट तक फैला होता है. यह अश्व के मुख की तरह दिखायी देता है। इस नक्षत्र के देवता अश्विनी कुमार है , लिंग पुरुष है और अश्विनी नक्षत्र का स्वामी केतु है। अश्विनी नक्षत्र को गण्डमूल नक्षत्र की श्रेणी में रखा गया है। जिन लोगों का जन्म इस नक्षत्र में होता है वह मूल दोष से पीड़ित होते हैं। इसके कारण बालक और उसके माता-पिता एवं भाई-बहिनों के जीवन पर कष्टकारी प्रभाव पड़ता है इसलिए इस नक्षत्र में पैदा हुए शिशु और उसके परिजनों की भलाई के लिए गंडमूल शांति के उपाय कराना अति आवश्यक है। यह दोष व्यक्ति के जीवन में परेशानियां पैदा करने में पूर्ण रूप से सक्षम होता है। माना जाता है कि गंड मूल नक्षत्र में जन्में जातक ना सिर्फ अपने परिवार के लिए बल्कि स्वयं अपने लिए भी परेशानी बन जाते हैं।जातक को स्वास्थ्य संबंधी कष्टों का सामना करना पड़ता है। जातक के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जातक को जीवनयापन में संघर्ष करना पड़ता है। जातक को दरिद्रता झेलनी पड़ती है और दुर्घटना का भय बना रहता है। इसलिए यदि किसी शिशु का जन्म गंडमूल में हुआ है तो जन्म के 27वें दिन ठीक उसी नक्षत्र के आने पर शांति करनी चाहिए। तब तक शिशु के पिता को उसका मुख नहीं देखना चाहिए शांति करवाने के बाद ही देखें। शांति भी किसी विशेषज्ञ पंडित से ही करवाना चाहिए

अश्विनी नक्षत्र के जन्म की कहानी बहुत रोचक है, अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनी कुमार सूर्य देव के पुत्र हैं. सूर्य का विवाह विश्वकर्मा की पुत्री संजना से हुआ था, लेकिन सूर्य की गर्मी और तेज के कारण, संजना उनसे दूर चली जाती हैं और अपनी छाया को सूर्य के पास छोड़ जाती हैं. सुर्य को जब इस बात का पता चलता है तो वह संजना को खोजने के लिए निकल पड़ते हैं. सूर्य देव को आता देखकर संजना घोड़ी का आकार ले लेती है , सूर्य देव भी घोड़े में बदल जाते है और देवी संजना को मना लेते है , उनकी दो जुड़वाँ संतान होती है दशर और नासत्य जो की अश्विनी कुमार के नाम से जाने जाते है। अश्विनी कुमार को भगवान के चिकित्सक के रूप में जाना जाता है. उन्हें वैद्य की उपाधि प्राप्त हुई है. इसलिए अश्विनी नक्षत्र के उत्पन्न जातक में चिकित्सा से संबंधित कार्य बहुत अनुकूल माने जाते हैं।

इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का चेहरा सुंदर और चमकदार होता है. बड़ी आंखें, चौड़ा माथा, बड़ी नाक होती है. जो इनसे प्रेम करते हैं और उनके लिए यह कुछ भी कर सकता है किसी भी हद तक जा सकते हैं। इनके दोस्त कम होंगे लेकिन सभी शुभचिंतक।

घोड़े के सिर को अश्विनी नक्षत्र का प्रतीक चिह्न माना जाता है जो इस नक्षत्र को घोड़े के बहुत से गुणों से जोड़ता है। उदाहरण के लिए घोड़े को यात्रा का प्रतीक माना जाता है, सो इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक यात्रा के शौकीन होंगे वे बिना थके यात्रा कर सकते है , भ्रमण से सम्बंधित नौकरी व्यवसाय इनको फलेगा, इसी प्रकार घोड़ा अपने साहस, गति तथा शक्ति के लिए भी जाना जाता है तथा घोड़े के यह गुण भी अश्विनी नक्षत्र के जातकों में अक्सर पाये जाते हैं। पूरी शक्ति से बिना थके, बिना रुके अपने कार्य को ख़त्म कर के ही आराम करेंगे। घोड़ा अपनी जिद तथा अड़ियल स्वभाव के लिये भी जाना जाता है, इस नक्षत्र में जन्मे जातक सामान्यतया जिद्दी अथवा अड़ियल स्वभाव के होते हैं तथा इनसे काम निकलवाना कई बार उसी प्रकार से मुश्किल हो जाता है जिस प्रकार किसी अड़ियल घोड़े पर सवारी करना।

धर्म, मंत्र शास्त्र और योग में भी आपकी रुचि होगी। आप निडर और साहसी के साथ क्रोधी रहेंगे परन्तु आपको क्रोध करने से हमेशा बचना चाहिए क्योंकि क्रोध में आप हमेशा कोई ऐसी गलती कर जाओगे जिसके लिए आपको बाद में पछताना पड़े। अपने दुश्मनों को पराजित करना आपको अच्छी तरह आता है और आपको ताक़त या दवाब से वश में नहीं किया जा सकता है; सिर्फ़ प्यार और स्नेह से ही आपको अपना बनाया जा सकता है। सामने आप बेहद शांत और संयमी दिखाई देंगे तथा अपना निर्णय लेने में कभी भी जल्दबाज़ी नहीं करेंगे। हर पहलू पर विचार करने के बाद ही आप कोई निर्णय करते हैं और एक बार जो निर्णय कर लेते हैं फिर उससे पीछे नहीं हटते।

अश्विनी नक्षत्र के सभी चार चरण मेष राशि में ही स्थित होते हैं जिसके कारण

मेष राशि तथा इस राशि के स्वामी मंगल का भी इस नक्षत्र पर प्रभाव रहता है। मेष राशि एवं मंगल ग्रह की कई विशेषताएं इस नक्षत्र के माध्यम से साकार होती हैं। गति साहस और शौर्य इन जातकों में मंगल की वजह से आता है।

नक्षत्र के पीड़ित होने पर, जातक आवेगी, आक्रामक, जिद्दी और अभिमानी हो सकता है. वह जुनून, वासना और विवेक की कमी से प्रभावित हो सकता है. जातक हमेशा नई चीजों को शुरू करने में रुचि रखता है, और इसलिए कई बार पूर्व के काम को बिना उसे समाप्त किए आधा छोड़ देता है। अश्विनी नक्षत्र के जातकों के चिकित्सा, सुरक्षा विभाग, पुलिस विभाग, सेना, गुप्तचर विभाग, इंजीनियरिंग, अध्यापन, प्रशिक्षण आदि क्षेत्रों में जाने के योग बनते है। साहित्य और संगीत के प्रति भी आपका ख़ासा लगाव होगा और आपकी आय के साधन भी एक से अधिक हो सकते हैं। इस वजह से आपकी संपत्ति भी अच्छी रहेगी।

अश्विनी नक्षत्र के जातकों को आम तौर पर मामूली मौसमी बीमारी सर्दी खांसी बुखार वगैरह रहेगा जो की सामान्यत 2-3 दिनों में ठीक भी हो जायेगा महिलाओ को मानसिक तनाव व मधुमेह की बीमारी रह सकती है।

भरणी नक्षत्र

भरणी राशिचक्र का दूसरा नक्षत्र है जो 13 डिग्री 20 मिनट से 26 डिग्री 40 मिनट तक फैला है और मेष राशि में निवास करता है. अश्विनी और भरणी दोनों ही नक्षत्र पूरी तरह से मंगल द्वारा शासित है और मेष राशि के अंदर ही निवास करते हैं. भरणी नक्षत्र का स्वामी शुक्र है. मेष राशि का स्वामी मंगल है जो पौरुष शक्ति को दर्शाता है और शुक्र नारी शक्ति को. नारी और पौरुष शक्ति के प्रभाव इस नक्षत्र में स्पष्ट दिखाई देते है।

भरणी का अर्थ भरण से है। भरण को वृहद रूप से समझे तो जहां पर बीज संरक्षित होकर पोषित हो। भरणी कलश, गर्भ के रूप में भी समझा जाता है। यह नक्षत्र बहुत ही गूढ़ नक्षत्र है। इस के नक्षत्र के देवता यम होते हैं। यम दिवंगत आत्माओं का शासक है, यम का मुख्य काम यही है कि वह शरीर से पृथक् होने वाली आत्मा को एक प्रकार का सहारा या शरण देता है जब तक कि यह आत्मा अपनी नयी यात्रा शुरू नहीं कर देती. यम का नाम ही लोगों के मन में आतंक पैदा कर देता है लेकिन यम बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि आत्माओं को इधर-उधर भटकने के लिए छोड़ नहीं देता है जब तक कि वे नये शरीर में प्रवेश नहीं कर लेतीं. वस्तुतः यम मनुष्य के प्राचीन पूर्वजों में से एक है।

यदि आपका जन्म भरणी नक्षत्र में हुआ है तो आप एक दृढ़ निश्चयी, चतुर एवं सत्यवादी होंगे अर्थात सदा सत्य बोलने वाले होंगे. शुक्र के कारण जहाँ आप सुखी एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन का निर्वाह करेंगे वही शुक्र मंगल की राशि में आपकी काम वासना भी अधिक बढ़ाएगा. आपके अनेक मित्र होंगे और आप अपने मित्रों में बहुत अधिक लोकप्रिय भी होंगे क्योंकि आप अपने मित्रों की सहायता करने में कभी पीछे नहीं हटेंगे। मित्रता करने में आप विशेष सावधानी भी बरतते हैं, पीठ पीछे बोलने वाले मित्र आपको कतई पसंद नहीं होंगे। यह धुन के पक्के होते हैं। एक बार जो ठान लेते हैं उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। काम को लटकाने की बजाय जल्दी से जल्दी पूरा करना इनके व्यक्तित्व की खास विशेषता होती है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति बहुत ही चतुर होते हैं। दूसरों से पैसा कैसे निकलवाना है इन्हे खूब आता है, इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है जिससे शत्रुओं को भी मित्र बना लेते हैं। लेकिन प्रेम प्रसंगों के कारण समाज एवं परिवार में अपमानित होना पड़ता है।इस नक्षत्र में व्यक्ति अनावश्यक रूप से धन खर्च करने से बचकर चलते हैं, लेकिन अपने परिवार की ज़रूरतों के मुताबिक़ आप खूब ख़र्च करते हैं क्योंकि अपने परिवार की हर छोटी-बड़ी ज़रूरतों को पूरा करना आपको महत्वपूर्ण लगता है। आप समस्याओं से भागते नहीं है यह उनका डट कर मुकाबला करते हैं।

आप दयालु और उदार हैं. लोग इसका लाभ उठा सकते हैं; लेकिन यह इतना आसान भी नहीं है, क्योंकि आपका दिमाग बहुत शातिर होता है और आप बहुत जल्दी भांप जाते हैं कि आपके आस पास क्या चल रहा है. आप अपने परिवार और अपने जीवनसाथी का पूरा खयाल रखते हैं, लेकिन आप अपना प्यार दिखाते नहीं हैं या यह कह ले की आपको प्या दिखाना आता नहीं है और कभी-कभी इसी कारण आपको गलत समझ लिया जाता है।

आप बहुत संवेदनशील हैं. अगर किसी ने आपके लिए कुछ भला किया है तो आप उसे भूलते नहीं हैं और इसे क़र्ज़ समझते है जो समय आने पर उतार देते हो ,आप दोनों ही स्थितियों में बहुत आगे तक जा सकते हैं. अगर आप किसी का भला करने पर उतर आते हैं तो इसकी कोई सीमा नहीं रहती और अगर आप किसी को बर्बाद करने पर तुल जाते हैं तो कोशिश करते है पर अंत में कर नहीं पाते क्योंकि वैसा आपका व्यक्तित्व नहीं है

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के लिए आंवले के वृक्ष की पूजा एवं उसका उपयोग व दान इत्यादि बहुत उपयोगी माना गया है. इस वृक्ष की लकड़ी एवं वृक्ष के फल का उपयोग किसी भी रुप में शुभ फलदायक बनता है. आंवल से बनी औषधी इत्यादि भी भरणी नक्षत्र के जातक लेकिन बहुत फायदेमंद होती है.

कैरियर की दृष्टि से इनके लिए मनोरंजन, खेल, पुलिस, चिकित्सा विभाग उन्नति दायक होता है। कारोबार की दृष्टि से अनाज एवं मनोरंजन और खेल से संबंधित वस्तुओं का व्यापार लाभप्रद रहता है।

जीरा का घरेलू उपचार में महत्व

ज्यो. डॉ. शैलेन्द्र सिंगला
पलवल हरियाणा

जीरा एक ऐसा मसाला है जिसके छौंक से दाल और सब्जियों का स्वाद बहुत बढ़ जाता है। चाट का चटपटा स्वाद भी जीरे के बिना अधूरा सा लगता है। अंग्रेजी में इसे क्यूमिन कहा जाता है। इसका वानस्पतिक नाम क्यूमिनम सायमिनम है। यह पियेशी परिवार का एक पुष्पीय पौधा है। मुख्यतः पूर्वी भूमध्य सागर से लेकर भारत तक इसकी पैदावार अधिक होती है।

दिखने में सौंफ के आकार का दिखाई देने वाला जीरा सिर्फ खाने का स्वाद ही नहीं बढ़ाता यह बहुत उपयोगी भी है। यही कारण है कि कई रोगों में दवा के रूप में भी जीरे का उपयोग किया जा सकता है। आइए देखते हैं घरेलू नुस्खे के रूप में किन रोगों के उपचार के लिए जीरा उपयोगी है.....

- जीरा आयरन का सबसे अच्छा स्रोत है। इसे नियमित रूप से खाने से खून की कमी दूर हो जाती है। गर्भवती महिलाओं के लिए जीरा अमृत का काम करता है।
- जीरा, अजवाइन, सौंठ, कालीमिर्च, और काला नमक अंदाज से लेकर इसमें घी में भूनी हींग कम मात्रा में मिलाकर खाने से पाचन शक्ति बढ़ती है। पेट का दर्द ठीक हो जाता है।
- जीरा, अजवाइन और काला नमक का चूर्ण बनाकर रोजाना एक चम्मच खाने से तेज भूख लगती है।
- 3 ग्राम जीरा और 125 मि.ग्रा. फिटकरी पोटली में बांधकर गुलाब जल में भिगो दें। आंख में दर्द होने पर या लाल

होने पर इस रस को टपकाने से आराम मिलता है।
- दही में भुने जीरे का चूर्ण मिलाकर खाने से डायरिया में आराम मिलता है।
- जीरे को नींबू के रस में भिगोकर नमक मिलाकर खाने से जी मिचलाना बंद हो जाता है।
- जीरा में थोड़ा-सा सिरका डालकर खाने से हिचकी बंद हो जाती है।
- जीरे को गुड़ में मिलाकर गोलियां बनाकर खाने से मलेरिया में लाभ होता है।
- एक चुटकी कच्चा जीरा खाने से एसिडिटी में तुरंत राहत मिलती है।
- डायबिटीज को नियंत्रित करने के लिए एक छोटा चम्मच पिसा जीरा दिन में दो बार पानी के साथ लेने से लाभ होता है।

- कब्जियत की समस्या हो तो जीरा, काली मिर्च, सौंठ और करी पाउडर को बराबर मात्रा में लें और मिश्रण तैयार कर लें। इसमें स्वादानुसार नमक डालकर घी में मिलाएं और चावल के साथ खाएं।राहत मिलेगी।
- पके हुए केले को मैश करके उसमें थोड़ा-सा जीरा मिलाकर रोजाना रात के खाने के बाद लें। अनिद्रा की समस्या दूर हो जाएगी।
- इसमें एंटीसेप्टिक तत्व भी पाया जाता है। सीने में जमे हुए कफ को बाहर निकलने के लिए जीरे को पीसकर फांक लें। यह सर्दी-जुकाम से भी राहत दिलाता है।
- हींग को उबाल लें। इस पानी में जीरा, पुदीना, नींबू और नमक मिलाकर पिलाने से हिस्टीरिया के रोगी को तत्काल लाभ होता है।
- थायराइड (गले की गांठ) में एक कप पालक के रस के साथ एक चम्मच शहद और चौथाई चम्मच जीरा पाउडर मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।
- मेथी, अजवाइन, जीरा और सौंफ 50-50 ग्राम और स्वादानुसार काला नमक मिलाकर पीस लें। एक चम्मच रोज सुबह सेवन करें। इससे शुगर, जोड़ों के दर्द और पेट के विकारों से आराम मिलेगा।
- प्रसूति के पश्चात जीरे के सेवन से गर्भाशय की सफाई हो जाती है।
- खुजली की समस्या हो तो जीरे को पानी में उबालकर स्नान करें। राहत मिलेगी।
- एक गिलास ताजी छाछ में सेंधा नमक और भुना हुआ जीरा मिलाकर भोजन के साथ लें। इससे अजीर्ण और अपच से छुटकारा मिलेगा।
- आंवले की गुठली निकालकर पीसकर भून लें। फिर उसमें स्वादानुसार जीरा, अजवाइन, सेंधा नमक और थोड़ी-सी भुनी हुई हींग मिलाकर गोलियां बना लें। इन्हें खाने से भूख बढ़ती है। इतना ही नहीं, इससे डकार, चक्कर और दस्त में लाभ होता है।
- जीरा उबाल लें और छानकर ठंडा करें। इस पानी से मुंह धोने से आपका चेहरा साफ और चमकदार होगा।
- एक चम्मच जीरा भूनकर रोजाना चबाने से याददाश्त अच्छी रहती है।
- जिनको अस्थमा, ब्रोंकाइटिस या अन्य सांस संबंधी समस्या है, उन्हें जीरे का नियमित प्रयोग किसी भी रूप में करना चाहिए।
- दक्षिण भारत में लोग अक्सर जीरे का पानी पीते हैं। उनके अनुसार, इसके सेवन से मौसमी बीमारियां नहीं होतीं और पेट भी तंदुरुस्त रहता है।
- 50 ग्राम जीरे में 50 ग्राम मिश्री मिलाकर पीसकर पाउडर बना लें। इसे सुबह-शाम एक चम्मच सेवन करें। बवासीर में आराम मिलेगा।

जीवन में बुराई छोड़ने का प्रयास करें

जितनी बुराई है, सब अपने सुखभोग से पैदा की है। इसलिये आप पर जिम्मेवारी है। अगर भगवान् की कीगई बुराई होती तो जिम्मेवारी भगवान् पर होती। आप सुख की इच्छाका त्याग कर दो तो बुराई मिट जायगी।

जो किसी को अपने से अलग नहीं मानता और किसीसे कुछ नहीं चाहता, उसके जीवनमें कोई भी बुराई नहीं आती। जिसके जीवनमें कोई भी बुराई नहीं आती, वह 'महामानव' अर्थात् सबसे बड़ा (श्रेष्ठ) आदमी होता है।

भलाई करनेमें बहादुरी नहीं है, प्रत्युत बुराई छोड़ने में बहादुरी है।

किसी को बुरा समझने से वह भी बुरा बन जायगा और हमारेमें भी बुराई आ जायगी। किसीको बुरा समझना अपनेमें बुराईको निमन्त्रण देना है। भलाई करना विध्यात्मक साधन है और बुराईका त्याग करना निषेधात्मक साधन है। भलाई करने से कहीं-न-कहीं बुराई रह सकती है, पर बुराई न करनेसे भलाई सर्वथा आ जाती है। कारण कि भलाई असीम है। कितनी ही भलाई करें, पर वह बाकी रहेगी ही। भलाई करनेसे भलाईका अन्त नहीं आता, पर बुराई न करनेसे बुराईका अन्त आ जाता है। तात्पर्य है कि भलाई करनेसे भलाई बाकी रहती है, पर बुराई न करनेसे बुराई बाकी नहीं रहती।

श्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराज

('कल्याणकारी सन्तवाणी'

पुस्तक से साभार)

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अप्रैल से जून 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल 2023

यह मास आपकी राशि पर अनावश्यक खर्च की वृद्धि कर आएगा स्थाई संपत्ति के बारे में कुछ खर्च के योग बनते हैं। अनावश्यक तनाव रह सकता है। अधिक खर्च तथा यात्राओं में व्यस्तता रहेगी; इस कारण स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव रह सकता है कार्य निवर्तन में पत्नी की सलाह अनुकूल सिद्ध होगी। पारिवारिक चिंताएं दूर होंगी महासकर 7, 12 19, 21 एवं 29 तारीख शुभ है।

मई 2023

मास सामान्य फलदायक है कुछ पुरानी समस्याएं उभर कर सामने आएंगे शांति से उसका निपटारा करना चाहिए सामाजिक कार्य दायित्व में सावधानी रखें तथा यदि व्यापारी वर्ग में है तो अनावश्यक खर्च से बचें ।मास में महिला वर्ग से सहयोग मिलेगा तथा माह के उत्तरार्द्ध में आर्थिक दृष्टि से लाभ मिलने के योग दिनांक 3,5 ,13 14,21 तथा 23 तारीख सावधानी पूर्वक कार्य करने की है शुभ फल की वृद्धि हेतु हनुमान जी की आराधना शुभ रहेगी।

जून 2023

यह मास आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा लेकिन आर्थिक खर्च की अधिकता रहेगी कुछ पुराने मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा स्वास्थ्य के प्रति सजगता रखना जरूरी है अनावश्यक विवाद से मास के उत्तार्ध में दूर रहे संतान की तरक्की के लिए प्रयासरत रहें यह मास अनुकूलता देगा मास की 5, 8, 9, 14, 23 और 29 तारीख शुभ है।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल 2023

विगत माहो के रुके हुए कुछ कार्य पूर्ण होंगे तथा कुछ कार्यों में गतिशीलता आएगी अपनी वाणी से संयत रहना आवश्यक है ताकि अनावश्यक वाद विवाद ना हो। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। संतान की अपेक्षित प्रगति से मन में प्रसन्नता रहेगी। अनावश्यक ऋण ग्रस्तता ना हो इसका ध्यान रखें। योजनाबद्ध कार्य करने से यह मास अनुकूल सिद्ध होगा। मास की 5 ,10, 14, 15 ,18 एवं 24 तारीख शुभ फल दायक है।

मई 2023

आपकी राशि के लिए यह मास मान सम्मान वृद्धि दायक है, तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के संपर्क में आकर लाभ प्राप्ति हो सकती है वाहन चलाने में सावधानी बरतना चाहिए पत्नी सुख उत्तम रहेगा तथा पारिवारिक सुख की वृद्धि होगी अपने कार्यों में अनावश्यक विवाद का सामना करना पड़ सकता है पुराने मित्रों से लाभ प्राप्ति के योग हैं मांस का है 8 ,14, 21, 24 एवं 27 शुभ दिन है अन्य दिनों में शुभ फल की वृद्धि के लिए देवी आराधना शुभ रहेगी।

जून 2023

इस मास में आपके कार्यों में सफलता प्राप्त होगी कुछ नए रोजगार के साधन उपलब्ध होंगे तथा विगत माह में रुके हुए कार्यों में भी सफलता मिलेगी अधिक व्यस्तता के कारण स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव ना हो इसका ध्यान रखें अनावश्यक भ्रमण से सावधानी रखें मास की 3 ,8 ,15, 18,21 ,26 एवं 29 तारीख शुभ है।

मिथुन
का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

अप्रैल 2023

इस मास में प्रतियोगी कार्य में सफलता प्राप्त होगी रोजगार के अनुकूल अवसर प्राप्त होंगे कुछ धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी पुराने रोग का उपचार स्वास्थ्य वर्द्धक रहेगा।कार्य की अधिकता के कारण कोई कार्य अधूरा ना छूटे अथवा त्रुटिपूर्ण ना हो इसका ध्यान रखना चाहिए। मास के अंतमें वरिष्ठजनअधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। मास की 4, 7, 12, 16 ,20, 24 एवं 28 शुभ है।

मई 2023

इस मास में पुरानी समस्याएं दूर होंगी तथा कार्यक्षेत्र में नवीन साधन उपलब्ध होने के योग हैं अपने कार्य में ध्यान दें व्यर्थ के विवाद में ना पड़े अन्यथा मानसिक चिंताएं वृद्धि हो सकती है जिससे आर्थिक नुकसान के योग बन सकते हैं संतान के कार्यों में प्रगति तथा संतुष्टि प्राप्त होगी ब्राहमण के योग अधिक रहेंगे इस मास में 5, 11,13 ,16 ,20, 24 एवं 28 तारीख शुभ है। मासमेंशुभ फल की वृद्धि के लिए प्रति बुधवार गणेश जी को प्रसाद अर्पण करना चाहिए।

जून 2023

आपकी इस माह में विरोधियों का कार्यों में सामना करना पड़ेगा इस कारण मानसिक चिंता और तनाव रहेगा कुछ पारिवारिक कार्यों में भी उलझन में बढ़ेगी अनावश्यक क्लेश ना हो इसका ध्यान रखें धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी पारिवारिक खर्च भी माह में अधिक होगा मास की 4,9 14 ,24 एवं 29 शुभ तारीख है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अप्रैल से जून 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल 2023

इस मास में भूमि संबंधी कार्यों में वह होकर लाभ प्राप्त होगा कुछ नई योजनाएं भी सामने आएंगी जो सफलता दायक रहेगी मास में अधिक य करने से धन लाभ के योग बनेंगे कुछ मंगल कार्य करने के लिए व्यस्तता रहेगी तथा योजना सफल भी हो सकेगी। संतान के कुछ कार्य में आर्थिक खर्च के योग बन सकते हैं किंतु यह यश वर्धक रहेगा मास के अंत में भ्रमण को यथासंभव टाले। मास की 6,8 ,13 ,17 ,21 ,23 एवं 27 तारीख शुभ है।

मई 2023

यह माह धीरे-धीरे प्रगति की ओर अग्रसर करेगा पुराने रुके हुए कार्य में गतिशीलता आएगी तथा मानसिक संतुष्टि प्राप्त होगी पारिवारिक सुख की वृद्धि होगी संतान की इच्छित प्रगति से मन में संतुष्टि रहेगी कुछ साझेदारों अथवा पड़ोसियों से अनावश्यक मानसिक तनाव रह सकता है यदि कोर्ट कचहरी केकोई प्रकरणहै तो उनमें मास के उत्तरार्द्ध में धनात्मक परिणाम मिल सकते हैं। मास में 12, 15, 17,21 ,24 ,26 एवं 30 तारीख शुभ हैतथा मासमें शुभ फल की वृद्धि के लिए गुरुवार को पीले फल का दान तथा पीपल को जल चढ़ाना शुभ रहेगा।

जून 2023

यह मास मिश्रित फलदायक हैकई मानसिक चिंताओं के बावजूद कार्य में सफलता प्राप्त कर लेंगे। भूमि भवन अथवा वाहन का सुख इस माह में प्राप्त होगा। अपने रुके हुए कार्यों को ध्यानपूर्वक पूर्ण करने में अधिक ध्यान दें संतान की तरफ से संतुष्ठी और कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य के प्रति सजगता रखें। मास की 3, 6, 18, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, ढू, रे

अप्रैल 2023

इस माह आपको रोजगार में सफलता प्राप्त होगी। उधारी यथा संभव न करें ऐसे कार्यों के लिए मास में भ्रमण अधिक होगा। कुछ पुराने मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा तथा पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता अधिक रहेगी। साझेदारी के कार्यों में थोड़ा श्रम अधिक करना पड़ेगा; लेकिन सफलता मिलेगी। संतान की तरफ से मानसिक संतुष्टि रहेगी। मास की 2,6 ,12, 19 23 एवं 27 तारीख शुभ है।

मई 2023

यह मास मिश्रित फलदायक है आर्थिक दृष्टि से लाभ मिलेगा किंतु परिवार में पत्नी अथवा माता के स्वास्थ्य बाधाएं रह सकती है रोजगार मैं थोड़ी रुकावट विरोध अधिक लेकिन आर्थिक दृष्टि से सुधार रहेगा परिश्रम अधिक करना पड़ेगा स्वयं को स्वास्थ्य के प्रति सजगता रखना चाहिए कुछ राजकीय कार्य समय पर पूर्ण करने से मन में संतोष रहेगा दिनांक 3, 4, 15, 20, 21, और 23 अशुभ है इनमें सावधानी रखना चाहिए । सूर्य को अर्घ्य देना तथा सूर्यपूजन लाभप्रद रहेगी ।

जून 2023

सामाजिक कार्यक्रमों में आपका यह मास व्यस्तता का रहेगा। प्रयास और प्रयत्न करने से व्यापार/ कार्य में सफलता प्राप्त होने के योग बनेंगे। इस माह स्वास्थ्य पर ध्यान रखना बहुत जरूरी है। अनावश्यक खाद्य पदार्थ के सेवन में नियंत्रण रखना चाहिए। संतान की तरफ से अनावश्यक चिंताएं रहेगी शांतिपूर्ण अपने निर्णय लें ।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल 2023

आपको इस माह में अपने आय के अपेक्षाकृत खर्च की अधिकता रहेगी।अपने दैनिक कार्यों में आय व्यय का संतुलन बनाकर रखने का प्रयास करें।कुछ पुराना विरोध कम होगा एवं कार्य में गतिशीलता बढ़ेगी पत्नी के स्वास्थ्य पर ध्यान दें सामाजिक कार्य दायित्व में समय देना पड़ेगा लेकिन यह प्रतिष्ठा वर्धक रहेगा स्वास्थ्य विकार रह सकता है इस कारण अपने दैनिक कार्यों में नियमितता रखें। मास की 4, 7,8 ,17, 23 ,26 एवं 28 तारीख शुभ है।

मई 2023

यह मास आपके कार्यों में लाभप्रद मानसिक रूप से संतुष्टि तथा पुरानेमित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। कुछ नए कार्य करने की योजना भी बनेगी जिसमें सफलता प्राप्त होने के योग बनते हैं नकारात्मक विचारधारा वाले व्यक्तियों से थोड़े सावधानी रखें मास में संतान की चिंताएं रहेगी दिनांक 5,7, 20, 22 , एवं 26 नेस्ट हे शुभ कल की वृद्धि के लिए हरे फल का दान अथवा गणेश जी की आराधना करना शुभ रहेगा।

जून 2023

यह मास नौकरी और कृषि करने वालों के लिए लाभप्रद है भूमि भवन लाभ तथामित्रों की ओर से सहयोग प्राप्त होगा। थोड़ा स्थान परिवर्तन की संभावना बनती है पूंजी निवेश करना भी इस मास में शुभ फलदायक है पत्नी सुख उत्तम तथा सामाजिक सम्मान वृद्धि के योग हैं मास की 6,8 ,15 ,25 एवं 28 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अप्रैल से जून 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल 2023

यह मास मिश्रित फलदायक है पुराने विवाद शांत होंगे य राजकीय कार्य अथवा कोर्ट कचहरी के कार्यों में वांछित सफलता और संतोष मिलेगा। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। पत्नी अथवा संतान के स्वास्थ्य के लिए खर्च होगा। अपनी विगत माहों की लम्बित पड़ी कार्य की योजना को क्रियान्वित करने का प्रयास करे। भ्रमण और खर्च की अधिकता रहेगी मास की 2,3,7, 12,14 ,20, 23 एवं 29 तारीख शुभ है।

मई 2023

विगत समय से आ रही कठिनाइयां धीरे-धीरे कम होगी शनि का शुभ प्रभाव आरंभ होगा। शुभ कार्य मैं आ रही रुकावटें दूर होगी कुछ नए संबंध स्थापित होंगे पद एवं मान-सम्मान की वृद्धि होने के योग हैं । नए कार्य की योजना बनेगी। अनावश्यक विवाद से दूर रहें तथा अपनी वाणी को संयत रखे। तारीख 4,7,12, 24, 29 शुभ है। मास में अन्य दिनों के शुभत्व के लिए देवी आराधना या महिलाओं को सम्मान देवें ताकि ग्रहयोग अनुकूल रहेंगे।

जून 2023

मास में धार्मिक कार्यों की रुचि बढ़ेगी। सामाजिक कार्य दायित्व का उत्साह पूर्वक निर्वहन कर सकेंगे। अपने कार्यों में संतुष्टि रहेगी तथा कुछ कार्य दायित्व की वृद्धि भी होगी नौकरी वर्क के लिए उत्तम समय है सुखद अनुभव करेंगे संतान की चिंता इस मास में जरूर रहेगी मास की 3, 6, 12, 15, 21 से 24 तारीख शुभ है ।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल 2023

अपने रोजगार अथवा कार्यों में अधिकसावधानी बरतना चाहिए। अनावश्यक वाद विवाद से बचना चाहिए। वाहन चलाने में अथवा यात्रा में सावधानी बरतना जरूरी है।यह मास सतर्कता से कार्यों को करने मे ही सफलता दे सकता है। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना भी जरूरी है साझेदारी के कार्यों में अनावश्यक तनाव रह सकता है मास का उत्तरार्ध अनुकूल रहेगा। तारीख 5, 7,10, 21, 23 एवं 28 शुभ है।

मई 2023

कारोबार में थोड़ा सावधानी से कार्य करें अनावश्यक विवाद से बचें व्यर्थ की दौड़-धूप की वृद्धि के कारण अपने नियमित लाभकार्यों में व्यवधान आ सकता है। पारिवारिक कार्यों में ध्यान दें ताकि पारिवारिक अशांति ना रहे। दिनाक 8,9,11,15,17,23,26 शुभ है। शुभत्व की वृद्धि हेतु लालफल, खाद्यान्न का दान और हनुमानजी की उपासना लाभ प्रद रहेगी।

जून 2023

मास में अपने कार्य दायित्व में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि आप सामाजिक और पारिवारिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। साहस और पराक्रम की वृद्धि होगी कोई निर्णय में सावधानी बरतें; अन्यथा आर्थिक क्षति हो सकती है मास की 4, 9, 13, 17, 23 एवं 29 तारीख शुभ है।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

अप्रैल 2023

यह मास अनुकूल रहेगा उत्तम और श्रेष्ठ व्यक्ति यों से समागम होगा तथा आर्थिक लाभ के अवसर बढ़ेगें।पारिवारिक कार्य दायित्व में व्यस्तता रहेगी एवं खर्च की वृद्धि भी होगी। अपने कार्य दायित्व में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता रहेगी।किसी अन्य के भरोसे कार्य में नुकसान होने की संभावना प्रतीत हो रही है मास में पुराने अपने प्रतिद्वंदी से विरोधाभास रह सकता है। इस मास की 4,6, 13, 20, 21, 25 एवं 28 तारीख शुभ है।

मई 2023

यह मास अनुकूल रहेगा कुछ सामाजिक कार्य दायित्व भी आपको मिलेंगे जिससे मान सम्मान प्रतिष्ठा वृद्धि होगी अपने कारोबार से भी संतुष्टि रहेगी। आर्थिक लाभ समय पर होगा। स्वास्थ्य के लिए ध्यान रखें। संतान के कार्यों पर अधिक ध्यान देना होगा इस मास में दो 7, 15, 18, 21, 24 एवं 28 शुभ है शुभत्व की वृद्धि के लिए वृद्धजनों का सम्मान अथवा ज्ञानवर्धक पुस्तकें दान करना शुभ रहेगा।

जून 2023

इस मास में आपको अपने मित्रों एवं सहयोगियों से वैचारिक तालमेल बनाकर चलना चाहिए अन्यथा मानसिक तनाव की स्थिति बन सकती है ।अपने पारिवारिक सदस्यों से मिलकर निर्णय करना इस मास में शुभ रहेगा किसी मांगलिक कार्य दायित्व में व्यवस्था भी रहेगी मास की 4,7, 8,11,14, 24 एवं 30 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अप्रैल से जून 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

अप्रैल 2023

यह मास आर्थिक स्थिति का विकास कराएगा साथ ही कुछ नई योजनाएं बनाने का लक्ष्य निर्धारित कराएगा। बने बनाए कार्य में रुकावट और व्यर्थ भ्रमण के साथ मास के उत्तरार्द्ध में अशांति रह सकती। पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रहेगी ध्यान रखना चाहिए।कुछ धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी।पुराने विरोधियो के द्वारा सुलह का प्रस्ताव मान्य करना हितकर रहेगा। मास की 2,3, 6, 12, 16, 19, 24 एवं 26 तारीख शुभ रहेगी।

मई 2023

अपने कार्य में सामान्य परिवर्तन की संभावना मानसिक संतुष्टि तथा पारिवारिक सुख की वृद्धि होगी कुछ पुरानी बात को लेकर मित्रों में असमंजस और संतोष दे सकता है अतः वाणी से सावधान रहें कुछ सम्मानित व्यक्ति यों का सहयोग मिलेगा पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति सजगता जरूरी है मास में 3,8,13,19,23 ,26 तारीख शुभ है अन्य दिनो में शुभ फल की वृद्धि के लिए न्याय पूर्ण कार्य तथा अपने सेवकों के प्रति उत्तम व्यवहार रखें जिससे शनि ग्रह की शांति अपने आप होगी। हनुमान जी को भी दीपदान प्रतिदिन करना भी शुभ रहेगा।

जून 2023

यह मास आपके कार्य करने की शक्ति / मनोबल को बढ़ाएगा। व्यापार कर्म पक्ष आदि के सम्बन्ध उत्तम रहेंगे। मार्च के उत्तरार्ध में अनावश्यक क्रोध ना करें और वाणी पर नियंत्रण रखें व्यर्थ की शत्रुता हो सकती है पत्नी सुख अच्छा रहेगा। कुछ पुराने रुके हुए कार्य का धन प्राप्त हो सकता है मास की 4, 5, 11, 13, 22, 24 एवं 30 तारीख शुभ है।

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल 2023

मास में अपनी मान प्रतिष्ठा वृद्धि होगी कुछ पुराने कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे और पारिवारिक दृष्टि से सुख समृद्धि रहेगी पुराना रुका हुआ द्रव्य प्राप्त होगा। अपने उतावलेपन से कार्य के दौरान कोई त्रुटि ना रहे अन्यथा उसे दोबारा करना पड़ सकता है यह सावधानी रखें।बाहरी व्यक्ति लाभप्रद रहेंगे पत्नी के स्वास्थ्य में भी सुधार रहेगा धन या परिवार अथवा जमीन संबंधी विवाद में विजयी होंगे।मास की 5 , 14 ,19 ,24 एवं 29 तारीख शुभ है।

मई 2023

यह मास पारिवारिक सुख की दृष्टि से उत्तम है कुछ नई योजनाएं बनेगी और उन्हें मूर्त रूप देने के लिए भी व्यस्तता रहेगी पिछले माहों में यदि कोई त्रुटि रही हो तो उसके संशोधन का अनुकूल समय है सम्मानीय लोगों से संबंध स्थापित होंगे जो भाभी जीवन के लिए अनुकूल रहेंगे मास की दो 6, 8, 14, 17, 21 और 28 तारीख शुभ है अन्य दिनों के लिए भी प्रतिदिन अपने इष्ट की दीपक लगाकर आराधना करना शुभ फल में वृद्धि करेगी।

जून 2023

यह मास सभी पिछली सभी समस्याओंका निवारक रहेगा अनावश्यक खर्चों पर रोक तथा नियंत्रण रखें। व्यर्थ की भागदौड़ से बचें। पारिवारिक विवाद ना हो इसका भी ध्यान रखें कर्म पक्ष में संतुष्टि रहेगी मास में 2, 7,12 ,23 24 एवं 29 तारीख शुभ है।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

अप्रैल 2023

यह मास आपके लिए स्थाईत्व तथा भौतिक संसाधनों की प्राप्ति के लिए उत्तम रहेगा। राजकीय कार्यों तथा न्यायिक वादों में भी सफलता औरयश प्राप्त होगा यदि वाणी में सतर्कता रखेंगे तो अनावश्यक विवाद से बचेंगे। अपने कर्म संबंधी कार्यमे प्रतियोगिता बढ़ेगी। पारिवारिक और सामाजिक कार्यों में मास के उत्तरार्द्ध मे व्यस्तता रहेगी। मास की 3,4 ,8, 15, 16 ,21 एवं 27 तारीख शुभ है।

मई 2023

यह मास सामाजिक व्यवस्थाओं तथा पारिवारिक कार्या की व्यस्तताओ से परिपूर्ण रहेगा। अपने मित्रों के प्रभाव से कार्यों/ रोजगार में सफलता प्राप्त होगी। किसी प्रतिस्पर्धा के कार्य में यदि भाग लेते हैं तो सफलता के अनुकूल लाभ मिलेंगे। संतान सुख प्राप्तहोगा यदि संतान किसी शैक्षणिक अथवा रोजगार के कार्य की ओर प्रेरित होना चाहता है तो यह मास उसके अनुकूल रहेगा। मास की 1 ,5,11,13 ,21 और 24 तारीख शुभ है। कार्यों में सफलता के लिए शिवजी का पूजन करना शुभ फल की वृद्धि करेगा।

जून 2023

यह मास मन को अधिक प्रसन्न रखेगा । खर्च की अधिकता के कारण अपने कार्य में थोड़ी बाधाएं आएगी । लेकिन इस माह में आनंद और संतुष्टि का अनुभव करेंगे। इष्ट मित्रों और रिश्तेदारों की नज़दीकियां बढ़ेगी। संतान के कार्यों से थोड़ा असंतोष रहेगा मास की 3,7,12,14,18 एवं 25 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अप्रैल से जून 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

अप्रैल 2023 के व्रत पर्व

1 अप्रैल, शनिवार - कामदा एकादशी व्रत

2 अप्रैल, रविवार - मदन द्वादशी

3 अप्रैल, सोमवार - सोम प्रदोष व्रत

4 अप्रैल, मंगलवार - महावरी जयन्ती (जैन)

5 अप्रैल, बुधवार - व्रत की पूर्णिमा

6 अप्रैल, गुरुवार - स्नानदान की चैत्र पूर्णिमा, श्री हनुमान जन्मोत्सव, वैशाख स्नान प्रारंभ

7 अप्रैल, शुक्रवार - वैशाख कृष्ण पक्ष आरंभ

9 अप्रैल, रविवार - संकष्ठी चतुर्थी व्रत

10 अप्रैल, सोमवार - अनुसूईया जयन्ती

13 अप्रैल, गुरुवार - कालाष्टमी

14 अप्रैल, शुक्रवार - चण्डिका नवमी/संत झूलेलाल जयन्ती, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती

16 अप्रैल, रविवार - वरुथिनी एकादशी (स्मार्त एवं वैष्णव)

20 अप्रैल, गुरुवार - स्नानदान श्रद्धादि की अमावस्या

22 अप्रैल, शनिवार - परशुराम जयन्ती (प्रदोष काल में जन्मोत्सव) श्रीमातंगी जयन्ती

23 अप्रैल, रविवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत/अक्षय तृतीया पर्व

25 अप्रैल, मंगलवार - जगतगुरु श्री आद्यशंकराचार्य जी जयन्ती, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, सूरदास जयन्ती

26 अप्रैल, बुधवार - गंगा सप्तमी/गंगोत्पत्ति

28 अप्रैल, शुक्रवार - वैशाखी दुर्गाष्टमी

28 अप्रैल, शनिवार - सीता नवमी / जानकी जयन्ती

शुभ मुहूर्त अप्रैल 2023

3 अप्रैल, सोमवार - खेत जोतना, हल चलाना सवेरे 9.00 से 10.00 के बीच प्रारंभ

6 अप्रैल, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, हल चलाना, भूमि/वाहन क्रय, सवेरे 6.30 से 7.40, दिन में 12.05 से 13.40

7 अप्रैल, शुक्रवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, हल चलाना, भूमि/वाहन क्रय, नवीन व्यापार सूर्योदय से सवेरे 8.45 के बीच, दिन में 12.00 से 13.30

10 अप्रैल, सोमवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, हल चलाना, भूमि/वाहन क्रय, नवीन व्यापार सवेरे 9.10 से 10.35, सायं 16.30 से 19.30

13 अप्रैल, गुरुवार - खेत जोतना, हल चलाना, सवेरे 6.30 से 7.30

16 अप्रैल, रविवार - भूमि अथवा वाहन क्रय सवेरे 9.15 से दिन में 12.15 के बीच

18 अप्रैल, मंगलवार - प्रसूति का स्नान दिन में 11.30 से 12.30 के बीच

19 अप्रैल, बुधवार - अन्नप्राशन, खेत जोतना, हल चलाना, भूमि/वाहन क्रय, सवेरे 10.30 से 12.00 दिन में

20 अप्रैल, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, खेत जोतना, हल चलाना, भूमि/वाहन क्रय दिन में 12.05 से 13.30

23 अप्रैल, रविवार - प्रसूति का स्नान, दिन में 9.15 से 12.15

24 अप्रैल, सोमवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, भूमि/वाहन क्रय, नवीन व्यापार, सवेरे 9.15 से 10.35 सायं 15.30 से 18.30

26 अप्रैल, बुधवार - अन्नप्राशन, खेत जोतना, हल चलाना, भूमि/वाहन क्रय, नवीन व्यापार सवेरे 10.30 से 12.05 दिन में

27 अप्रैल, गुरुवार - गृहारंभ (भूमिपूजन), खेत जोतना, हल चलाना, नवीन व्यापार दिन में 12.15 से 13.30

28 अप्रैल, शुक्रवार - देवप्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण उद्यान लगाना, भूमि अथवा वाहन क्रय, सूर्योदय से सवेरे 10.40 के बीच, दिन में 12.05 से 13.35

30 अप्रैल, रविवार - विद्यारंभ, सवेरे 9.15 से 12.15

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अप्रैल से जून 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मई 2023 के व्रत पर्व

1 मई, सोमवार - अखिल विश्व मजदूर दिवस, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

3 मई, बुधवार - प्रदोष व्रत

4 मई, गुरुवार - नरसिंह चतुर्दशी, नरसिंह अवतार, छिन्नमस्ता जयंती

5 मई, शुक्रवार - स्नानदान, व्रत की पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा व्रत/ बुद्ध पूर्णिमा, कुर्म जयन्ती

6 मई, शनिवार - ज्येष्ठ कृष्णपक्षर आरंभ

7 मई, रविवार - महर्षि नारद जयनती/रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती

8 मई, सोमवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

9 मई, मंगलवार - प्रथम ज्येष्ठ मंगल

15 मई, सोमवार - अपरा एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव/ ग्रीष्मऋतु आरंभ

17 मई, बुधवार - प्रदोष व्रत/मास शिवरात्रि व्रत

19 मई, शुक्रवार - शनिचरी जयन्ती, स्नानदान की अमावस्या, वट सावित्री व्रत

20 मई, शनिवार - करवीर व्रत

22 मई, सोमवार - ब्रह्माव्रत, रम्भा तृतीया

23 मई, मंगलवार - अंगारकी वैनायकी चतुर्थीव्रत

24 मई, बुधवार - श्रुति पंचमी

28 मई, रविवार - दुर्गाष्टमी/धूमावती जयन्ती/मेलाक्षीर भवानी (कश्मीर)

29 मई, सोमवार - महेश नवमी

30 मई, मंगलवार - गंगा दशहरा व्रत/सेतुबंध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस

31 मई, बुधवार - निर्जला एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव) भीमसेनी एकादशी

शुभ मुहूर्त मई 2023

3 मई, बुधवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा, चौलकर्म, मुण्डन, गृहारंभ, कर्ण छेदन, जलाशय निर्माण (दिन में 11.55 से 13.30, सायं 16.30 से 17.30)

5 मई, शुक्रवार - अन्नप्राशन, कर्ण छेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, गृहारंभ (भूमिपूजन), खेत जोतना, देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण (सूर्योदय से सवेरे 10.40, दिन में 12.15 से 13.40)

7 मई, रविवार - प्रसूति का स्नान, विद्यारंभ (सायं 16.30 से 18.15)

8 मई, सोमवार - चौलकर्म, मुण्डन संस्कार (सूर्योदय से सवेरे 7.30)

10 मई, बुधवार - जातकर्म, नामकरण, गृहप्रवेश, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, देव प्रतिष्ठा (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)

11 मई, गुरुवार - जातकर्म, नामकरण, गृहप्रवेश, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, देव प्रतिष्ठा (सूर्योदय से सवेरे 11.27 के बीच)

12 मई, शुक्रवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्ण छेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, देव प्रतिष्ठा, खेत जोतना (सवेरे 7.30 से 9.10, दिन में 13.30 से 16.30)

13 मई, शनिवार - उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, देव प्रतिष्ठा (दिन में 13.30 से 16.30)

14 मई, रविवार - विद्यारंभ (सवेरे 9.00 से 12.15)

15 मई, सोमवार - जातकर्म, नामकरण, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृहप्रवेश, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, देव प्रतिष्ठा, नवीन व्यापार (सवेरे 9.05 से 10.35, सायं 15.15 से 18.25)

16 मई, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 11.30 से 12.30)

17 मई, बुधवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, कर्ण छेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, गृहारंभ, गृहप्रवेश, भूमि पूजन, नवीनव्यापार, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण,देवप्रतिष्ठा (सूर्योदय से सवेरे 11.30 के बीच)

18 मई, गुरुवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.00 से 11.00 के बीच)

20 मई, शनिवार - उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण (सवेरे 7.25 से 9.15, दिन में 13.30 से 15.05)

21 मई, रविवार - विद्यारंभ (सवेरे 9.00 से 12.15 दिन में)

22 मई, सोमवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, कर्ण छेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, गृहारंभ, गृहप्रवेश, भूमिपूजन, नवीन व्यापार, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा (सवेरे 9.15 से 10.40, दिन में 15.15 से 18.15)

24 मई, बुधवार-अन्नप्राशन, कर्ण छेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, अक्षारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 10.30 से 12.15, दिन में 15.30 से 18.15)

25 मई, गुरुवार - कर्ण छेदन, अक्षारम्भ, विद्यारम्भ, उद्यान लगाना, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण (सूर्योदय से 7.30 प्रारंभ, दिन में 12.10 से 13.35)

26 मई, शुक्रवार - विद्यारंभ (सवेरे 9.00 से 10.00)

29 मई, सोमवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, गृहारंभ, गृहप्रवेश, भूमिपूजन, नवीन व्यापार, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा (सवेरे 9.00 से 10.15 सायं 15.15 से 18.15)

30 मई, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.00 से 11.30 के बीच)

31 मई, बुधवार - नामकरण, जातकर्म, कर्ण छेदन, अक्षरारम्भ, गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, खेत जोतना, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा (दिन में 13.46 से 18.15 के बीच)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अप्रैल से जून 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

जून 2023 के व्रत पर्व

1 जून, गुरुवार - प्रदोष व्रत/ मेला खाटू श्याम (राजस्थान)
सुपार्श्वनाथ जयन्ती

3 जून, शनिवार - चम्पक चतुर्दशी व्रत / व्रत की पूर्णिमा
दक्षिणात्य वट सावित्री व्रत

4 जून, रविवार - ज्येष्ठी पूर्णिमा व्रत / कबीर जयन्ती/
देवस्नान पूर्णिमा

5 जून, सोमवार - आषाढ़ कृष्ण पक्ष आरंभ
गुरु हरगोविंद सिंह जयन्ती

7 जून, बुधवार - संकष्ठी चतुर्थी व्रत

11 जून, रविवार - कालाष्टमी

14 जून, बुधवार - योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

15 जून, गुरुवार - प्रदोष व्रत, सूर्य की मिथुन संक्रान्ति

16 जून, शुक्रवार - मासशिवरात्री व्रत

17 जून, शनिवार - श्राद्ध की अमावस्या

18 जून, रविवार - स्नानदान की अमावस्या

19 जून, सोमवार - आषाढ़ शुक्लपक्ष /गुप्तनवरात्री प्रारंभ

20 जून, मंगलवार - जगन्नाथपुरी रथ यात्रा

23 जून, शुक्रवार - स्कन्द पंचमी

24 जून, शनिवार - कुमार षष्ठी

25 जून, रविववार - विश्वस्त सप्तमी

27 जून, मंगलवार - भड़ली नवमी

28 जून, बुधवार - सोमपदा दशमी, आशा दशमी

29 जून, गुरुवार - देवशयनी एकादशी, श्री हरिशयनोत्सव
चातुर्मास व्रत, नियम प्रारंभ

30 जून, शुक्रवार - वामन द्वादशी

शुभ मुहूर्त जून 2023

1 जून, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, कर्णछेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, नवीन व्यापार, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृहप्रवेश, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण (सूर्योदय से 7.15 के बीच, दिन में 12.05 से 13.30)

2 जून, शुक्रवार - गृहारंभ (भूमिपूजन), देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, भूमि अथवा वाहन क्रय (सूर्योदय से सवेरे 10.40, दिन में 11.55 से 13.30)

8 जून, गुरुवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, कर्ण छेदन,चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, अक्षरारम्भ, भूमि/वाहन क्रय, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, विद्यारंभ (सूर्योदय से सवेरे 7.30 आरंभ, दिन में 11.55 से 13.30)

9 जून, शुक्रवार - नामकरण, जातकर्म, कर्ण छेदन, विद्यारंभ, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना, देवप्रतिष्ठा, भूमि/वाहन क्रय (सूर्योदय से सवेरे 10.40, दिन में 12.05 से 13.40)

10 जून, शनिवार - गृहारंभ (भूमिपूजन), देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण (दिन में 13.30 से 18.30)

11 जून, रविवार - चौलकर्म, मुण्डन संस्कार (सवेरे 9.5 से 12.25 दिन)

12 जून, सोमवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, कर्ण छेदन, अक्षरारम्भ, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन व्यापार, देवप्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, गृहप्रवेश, उद्यान लगाना (सूर्योदय से 7.15, दिन में 15.15 से 18.30)

13 जून, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, गृहप्रवेश (जीर्ण) (सवेरे 9 से 12.15)

14 जून, बुधवार - कर्णछेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, अक्षरारम्भ, जलाशय निर्माण, देवप्रतिष्ठा, भूमि व वाहन क्रय, नवीन व्यापार, उद्यान लगाना (दिन में 10.30 से 12.15, सायं 15.15 से 18.15)

18 जून, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.00 से 11.30)

19 जून, सोमवार - अक्षरारम्भ (सवेरे 9.00 से 10.00)

20 जून, मंगलवार - देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण (सवेरे 9.15 से दिन में 12.30)

21 जून, बुधवार - कर्णछेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, अक्षरारम्भ, गृहारंभ (भूमिपूजन), देव प्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, भूमि अथवा वाहन क्रय, नवीन व्यापार (सूर्योदय से 9.15 के बीच आरंभ, दिन में 11.00 से 12.15 से सायं 15.15 से 18.15)

22 जून, गुरुवार - विद्यारंभ, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण (दिन में 12.15 से 13.35 प्रारंभ, सायं 19.10 के बीच तक पूर्ण)

25 जून, रविवार - प्रसूति का स्नान, देवप्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सवेरे 9.10 से दिन में 12.15)

26 जून, सोमवार - देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण, भूमि अथवा वाहन क्रय (सूर्योदय से प्रारंभ अथवा 9.30 से 10.30 के बीच)

27 जून, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, देवप्रतिष्ठा, गृहप्रवेश, गृहारंभ (भूमिपूजन) (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)

28 जून, बुधवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, कर्णछेदन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, नवीन व्यापार, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृहप्रवेश, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण (दिन मे 15.15 से 18.15)

29 जून, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, चौलकर्म, मुण्डन संस्कार, नवीन व्यापार, गृहारंभ (भूमिपूजन), भूमि, वाहन क्रय अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, जलाशय निर्माण (दिन में 12.15 से 13.35)

30 जून, शुक्रवार - नामकरण, जातकर्म, कर्णछेदन, विद्यारंभ, गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, उद्यान लगाना (सूर्योदय से सवेरे 10.30 के बीच प्रारंभ)

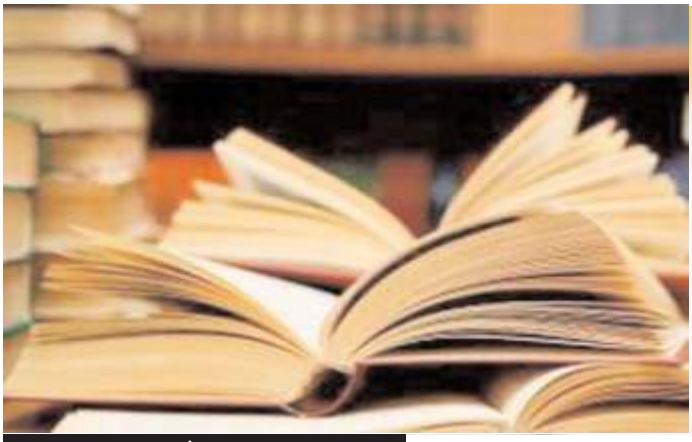

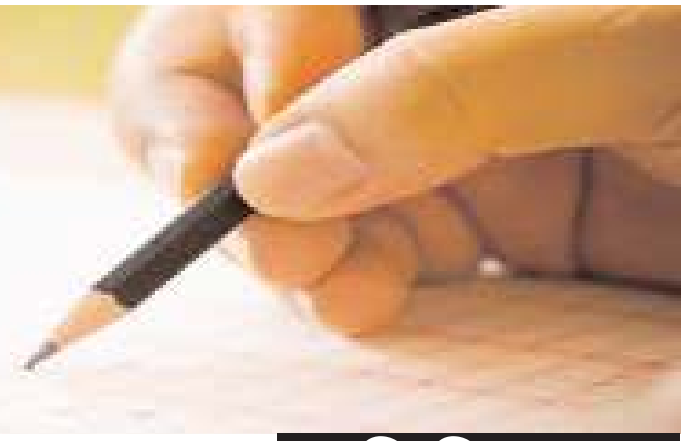

आपके पत्र

प्रतिक्रियाएं

आदरणीय सम्पादक जी

जीवन वैभव पत्रिका बहुत ही ज्ञानवर्धक तथा मेरे पूरे परिवार के लिए पठनीय हैं तथा प्रत्येक पत्रिका प्राप्त होने का हम प्रतीक्षा करते रहते हैं लेकिन कभी-कभी पत्रिका प्राप्त नहीं हो पाती कृपया समय पर जीवन वैभव भेजते रहने का कष्ट करें।

हेमन्त शर्मा
स्टेशन रोड राऊ इंदौर

श्री हेमन्त शर्मा जी आपको और परिवार को पत्रिका अच्छी लगी इसके लिए बहुत-बहुत आभार, जीवन वैभव पत्रिका में प्रकाशित लेख पूरे परिवार के लिए लाभप्रद रहें इसका प्रकाशन मण्डल पूरा ध्यान रखता है जिससे कि प्रकाशित होने वाले आलेख परिवार के लिए ज्ञानवर्धक और जीवनोपयोगी रहे यही हमारा उद्देश्य और प्रयास रहता है। जहां तक पत्रिका डाक से नहीं मिलने का प्रश्न है यदि इसे अतिरिक्त शुल्क देकर रजिस्टर्ड डाक से मंगाना चाहे तो निश्चित रूप से आपको समय पर मिल सकेगी।

सहा सम्पादक
जीवन वैभव

संपादक महोदय

सादर नमस्कार

जीवन वैभव पत्रिका देख करके लगा कि वास्तव में जीवन के लिए आवश्यक सभी बिंदुओं पर आलेख दिए गए हैं और सभी प्रकार की आवश्यक जानकारी व्रत पर्व भविष्यफल इत्यादि लाभप्रद होने से मैं त्रैवार्षिक सदस्यता ग्रहण कर रही हूं।

मधु आलोक वर्मा
अरविंद विहार भोपाल मप्र

आदरणीय मधु वर्माजी

आपके प्रतिक्रिया से मन को संतोष मिला कि हमारा और लेखकों का प्रयास सफलता की ओर अग्रसर होकर जीवन वैभव एक ज्ञानवर्धक पत्रिका के रुपयें आपने स्वीकार करके त्रैवार्षिक सदस्यता ग्रहण की है इसी प्रकार प्रकाशन को आपजैसे पाठक वर्ग का सहयोग मिलता रहेगा तो निश्चित रूपसे ज्ञानवर्द्धन की दृष्टिसे हमारा संकल्प नियमित रूपसे सफलता की ओर अग्रसर होते रहेंगे।

सहायक सम्पादक, जीवन वैभव

सम्पादक महोदय नमस्कार

जीवन वैभव पत्रिका पूरे परिवार के लिए ज्ञानवर्द्धक है इसलिए अच्छी लगी और इस पत्रिका का आजीवन मेंबरशिप ग्रहण कर रहा हूं कृपया नियमित भेजते रहें।

विनोद कुमार सिंघल
विजय नगर इंदौर म. प्र

श्री सिंघल साहब

आपके द्वारा जीवन वैभव कीआजीवन सदस्यता ग्रहण की है इसके लिए आपका बहुत-बहुत आभार इसी प्रकार अन्य सदस्यों को भी प्रेरित करते रहने से ज्ञान की सरिता में आपका भी योगदान रहेगा ।

सहायक सम्पादक, जीवन वैभव

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक जोकि वर्तमान में इण्डियन बैंक है इसमें जीवन वैभव पत्रिका का

खाता नंबर 50159870448

खाते का नाम – जीवन वैभव

आय एफ एस सी कोड – IDIB000B796

ब्रांच कोड – 4197

MICR code – 462019018

के अनुसार खाते में राशि जमा कराकर उसकी स्लीप तथा अपना पता वाट्सएप कर देवें ताकि पत्रिका नियमित भेजी जा सके।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल
संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम .....

डाक का पूरा पता .....

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल .....

सदस्यता ..... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण **5000/- 500/- 200/-**

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक ..... दिनाँक .....

चैक क्रमांक ..... दिनाँक .....

जीवन वैभव के नाम से इण्डियन बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका ''जीवन वैभव'' के बारे में आपकी रायः-

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पताः
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल
संपर्कः 9425008662
ईमेलः hcp2002@gmail.com

नोटः उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....

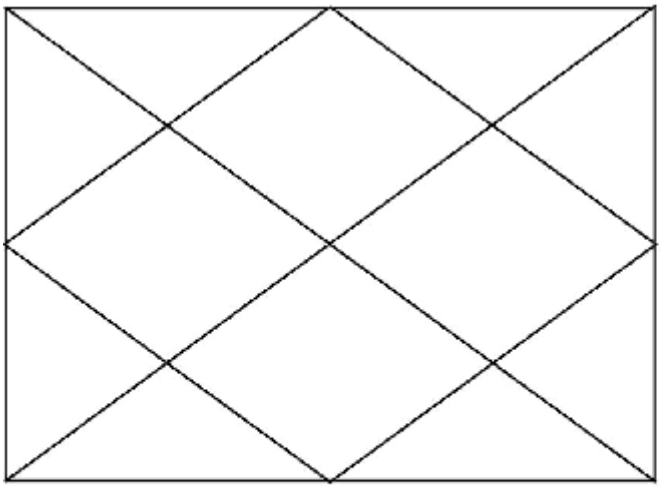

कोई एक प्रश्न .....

.....

भवदीय

.....

जीवन मूल्य और **नैतिक शिक्षा**
लेखक – डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
मूल्य 150 रूपये
अपनी प्रति सुरक्षित करावें –

फलित ज्योतिष शिक्षा के लिए
पाराशरी ज्योतिष फलित कोर्स
बेसिक कक्षा हेतु सम्पर्क करें
व्यवस्थापक जीवन वैभव
15 ए, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी.नगर भोपाल, म.प्र.
मोबाईल– 9425008662

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी
एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक
डाक/ कोरियर से जीवन वैभव
कार्यालय से प्राप्त करें।

ज्योतिष मित्र

ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान के
लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है।
एक प्रति 150 रुपये + वी. पी. डाक/
कोरियर 50 रुपये इस प्रकार 200 रुपये
भेजकर अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें।
लेखक – डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन- I, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्याल भोपाल में ज्योतिष सम्मेलन

जीवन वैभव विदेशों में सराही गई

ज्योतिष कोर्स की कक्षाएं जीवन वैभव परिसर में

आयएएसआय संस्था के संरक्षक एवं एस्ट्रोवर्स संस्था अध्यक्ष ज्योतिष विद्यार्थियों के साथ जीवन वैभव परिसर में

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर है–

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते है। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते है।

वार्षिक सदस्यता रू.100/–, त्रैवार्षिक रू. 300/–, आजीवन सदस्यता रू. 1800/–

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 350 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता "जीवन वैभव" के नाम से अरेरा कॉलोनी की इण्डियन बैंक के खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड IDIB000B796 के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

- जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी है, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र–निर्माण, योग, होम्योपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि। जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय हैं।
- वंदना', अमृतवाणी , वैभवदर्शन , गीता माता , उचितआहार, चिकित्सा , धर्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य, व्रत पर्व, विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल आदि जानकारी प्रत्येक अंक में उपब्ध रहती है।
- महापुरूषों द्वारा दिए गए आर्शीर्वचन एवं सुखी जीवन के लिए अनमोल सुझाव पृथक से बाक्स के रूप में दिये जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं।
- **जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है, तथा जीवन वैभव के उपरोक्त पुराने उपलब्ध अंक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।**

कार्यालय का पता व्यवस्थापक **जीवन वैभव**

15 ए. प्रेस काम्प्लेक्स, जोन–1 महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : hcp2002@gmail.com